नूतन वर्ष 2026 अभिनन्दन

Website : www.sainsrijanpatal.com

साईं सृजन पटल

मासिक ई-पत्रिका

MSME Registration No.
UDYAM-UK-05-0103926

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

वर्ष-2 | अंक-17 | दिसम्बर - 2025 | पृष्ठ-28 | निःशुल्क

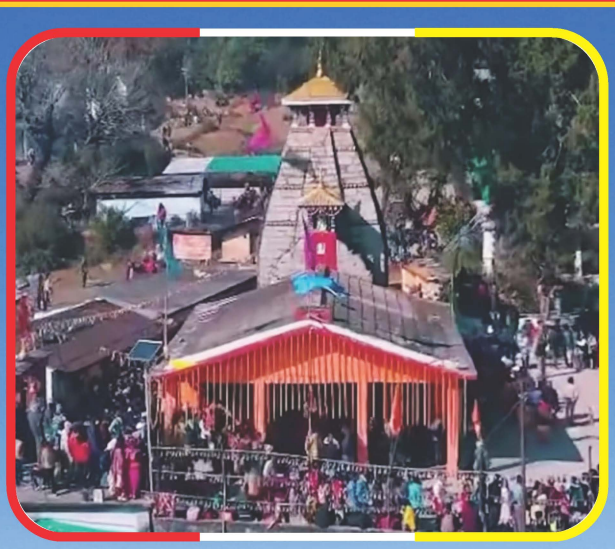

संदेश

समाज में नए आयामों की ओर बढ़ते हुए, साईं सृजन पटल ने अपनी सृजनात्मकता और नवीन दृष्टिकोण से यह महत्वपूर्ण प्रयास किया है। मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल और सृजनशील लेखकों की सराहना करता हूँ जिन्होंने इस माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक, और शैक्षिक मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श किया है। यह पत्रिका केवल साहित्यिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्र निर्माण में भी अपनी भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका के माध्यम से युवा पीढ़ी के विचारों को सशक्त बनाने का सराहनीय प्रयास किया जा रहा है, ताकि वे अपनी जिम्मेदारियों का सही से निर्वहन कर सकें और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।

साईं सृजन पटल का यह प्रयास समाज में साहित्य, कला, संस्कृति और विज्ञान के समागम से नवप्रवर्तन की ओर मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस प्रकार के प्लेटफॉर्म से हम न केवल सांस्कृतिक विविधताओं का सम्मान करते हैं, बल्कि राष्ट्र की एकता और अखंडता को भी मजबूत बनाते हैं। मैं इस पत्रिका के सम्पूर्ण संपादक मंडल, लेखकों, और सभी योगदानकर्ताओं को शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रोफेसर डी. डी. मैठाणी
सेवानिवृत्त, भूगोल विभाग, हे.न.ब.केन्द्रीय
गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल

सम्पादकीय

नववर्ष 2026 की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ 'साईं सृजन पटल' का सत्रहवां अंक प्रबुद्ध पाठकों को सौंपते हुए अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में धर्म व आस्था से जुड़े आलेखों में मां अनुसूया मंदिर, सेम-मुखेम मंदिर और देवभूमि में आध्यात्मिक राजधानी की उपयुक्तता पर जानकारी दी गई है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में योग, जन औषधि केन्द्र और उप संपादक अंकित तिवारी द्वारा अपने जन्मदिन पर रक्तदान को भी रेखांकित किया गया है। हरित सौंदर्य कौशल व युवा जलवायु वैज्ञानिकों के लिए आयोजित कार्यशालाएं भी इस अंक का हिस्सा बनी हैं। राखी सिंह राजपूत की चित्रकला और दर्शन लाल की काष्ठ कला भी सराहनीय है। नवाचार के क्षेत्र में जी.आई. टैग ,भूदेव ऐप और जंपिंग कुशन भी पाठकों को आकर्षित करेगा। लेखक गांव में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी व सिटी फॉरेस्ट पार्क को भी पाठकों तक शब्दों के माध्यम से पहुंचाया गया है। उत्तराखंड सरकार द्वारा टॉपर्स को शैक्षणिक भ्रमण व कर्णप्रयाग कालेज के तीस छात्रों को शिक्षा सहायता भी छात्र हित के कार्यक्रम रहे हैं। लोक हितकारी परिषद डोईवाला द्वारा जरूरतमंद 150 स्कूली बच्चों को स्वेटर वितरण प्रशंसनीय है।

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' को लाईफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, पद्मभूषण डॉ. अनिल जोशी को इंसा अवार्ड, सूचना महानिदेशक बंशीधर तिवारी को राष्ट्रीय सम्मान और ग्राफिक एरा के चेयरमैन डॉ. कमल घनशाला को ई.एस.क्यू.आर.अवार्ड पाने के लिए साईं सृजन पटल की ओर से हार्दिक बधाईयां !

प्रो. (डॉ.) के. एल. तलवाड़

साईं सृजन पटल
मासिक ई-पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक
प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)
मो.- 9412142822
ई-मेलः sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाईट - sainsrijanpatal.com

उप संपादक
अंकित तिवारी
एम.ए., एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक
अमन तलवाड़
मो. 7300883189

द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साईं कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल
डॉ.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
प्रो. राजेश कुमार उभान (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डॉ. मंजू कोगियाल, असि. प्रो. हिन्दी
डॉ. चन्द्रभूषण बिजल्वाण साहित्यकार

आवरण पृष्ठ
मंडल घाटी में अनुसूया माता मंदिर, दर्शन लाल की काष्ठकला,
राखी सिंह राजपूत की चित्रकला,एमडीडीए का सिटी फॉरेस्ट पार्क

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं, जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मां अनुसूया के दरबार में उमड़ता है भक्तों का सैलाब

जनपद चमोली के मडंल घाटी में स्थित मां अनुसूया देवी मंदिर उत्तराखंड का एक प्रसिद्ध और चमत्कारी तीर्थ स्थल है, यह सती अनुसूया के पतिव्रत धर्म और मातृत्व का प्रतीक है, जिसे संतान प्राप्ति की चमत्कारी शक्ति के लिए जाना जाता है, जहाँ निसंतान दंपति विशेष अनुष्ठानों के साथ संतान प्राप्ति की मनोकामना लेकर आते हैं। यह मंदिर ऋषि अत्रि और सती अनुसूया को समर्पित है, जहाँ दत्तात्रेय जयंती के पावन अवसर पर मां अनुसूया मेला धार्मिक परंपराओं और विधि– विधान के साथ इस वर्ष तीन और चार दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। आस्था और विश्वास से सराबोर इस मेले में हजारों भक्तों ने मंदिर पहुंचकर मां के दर्शन किए। मडंल से अनुसूया मंदिर तक पांच किलोमीटर पैदल मार्ग से विभिन्न गांवों से देवी की डोलियां मंदिर पहुंचती हैं।मान्यता है कि मां अनुसूया दंपतियों की मनोकामना अवश्य पूर्ण करती हैं। इसी आस्था के साथ इस वर्ष देश के विभिन्न हिस्सों से 275 दम्पति मां के दरबार में संतान प्राप्ति की कामना लेकर पंहुचे। मंदिर के पुजारी डॉ. प्रदीप सेमवाल ने बताया कि सभी दंपतियों ने पूरे दिन उपवास रखा, रात्रि को जागरण किया और अपलक साधना के साथ मां अनुसूया से संतान सुख के लिए अर्चना– अविधान किया।

यह मंदिर चमोली जनपद के गोपेश्वर से लगभग 13 किलोमीटर दूर मंडल गांव के पास ऋषिकुल पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित है। मंडल गांव तक वाहन से पहुंचा जा सकता है। यहाँ से 5 किलोमीटर की खड़ी पैदल चढाई है, जो बांज, बुराँश व देवदार के वनों से घिरी एक सुन्दर यात्रा है। अनुसूया माता की यात्रा पूरे वर्ष होती है। तथापि मार्गशीर्ष मास की शुक्ल चतुर्दशी– पूर्णिमा (दत्तात्रेय जयंती) के पुनीत पर्व का यहाँ विशेष महत्व है।अनुसूया मेले में पहुंचने वाले भक्त अत्रि मुनि आश्रम के पास अमृत गंगा की परिक्रमा करना नहीं भूलते हैं। यह परिक्रमा बेहद कठिन और रोमांचित करने वाली मानी जाती है। चट्टान के शीर्ष भाग से अमृत गंगा की धारा जमीन गिरती है । श्रद्धालु चट्टान के एक छोर से एक विशालकाय पत्थर के नीचे पेट के बल लेटकर दूसरे छोर पर पहुंचते हैं। यहाँ अमृत गंगा की बहती धारा की परिक्रमा होती है। अनुसूया देवी मंदिर सिर्फ एक धार्मिक स्थल नहीं बल्कि प्रकृति की गोद में बसा एक शांत और आध्यात्मिक स्थान है, जहॉ भक्त, मन की शांति और इच्छा पूर्ति के लिए आते हैं।

प्रस्तुति:
डॉ. रमेश चन्द्र भट्ट विभागाध्यक्ष भूगोल,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कर्णप्रयाग

कार्यशालाएँ

ISRO भुवन आधारित जलवायु अध्ययन कार्यक्रम

युवा जलवायु वैज्ञानिकों को सशक्त बनाने की पहल

विद्यालयी शिक्षा विभाग, उत्तराखंड तथा SPECS के संयुक्त तत्वावधान में, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार एवं ISRO के तकनीकी सहयोग से **'डिजिटल मौसम निगरानी यंत्र निर्माण एवं उसके अनुप्रयोग'** विषय पर तीन दिवसीय कार्यशालाएँ 6 दिसंबर 2025 तक सफलतापूर्वक आयोजित की गईं। ये कार्यशालाएँ निम्नलिखित स्थानों पर संपन्न हुईं।

1. दिल्ली पब्लिक स्कूल, रुद्रपुर
2. राजकीय इंटर कॉलेज, खुमाड़ (सल्ट ब्लॉक), अल्मोड़ा
3. राजकीय इंटर कॉलेज, धूमाकोट (नैनीडांडा ब्लॉक), पौड़ी गढ़वाल

यह कार्यक्रम उत्तराखंड के 50 चयनित विद्यालयों में जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक अध्ययन को बढ़ावा देने तथा छात्रों को उपग्रह आधारित तकनीकों का प्रशिक्षण देने की राज्यव्यापी पहल का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस पहल के अंतर्गत विद्यालयों की कक्षाओं को स्कूल क्लाइमेट रिसर्च लैब्स के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहाँ छात्र इसरो के भुवन पोर्टल की सहायता से पर्यावरणीय डाटा का विश्लेषण कर सकेंगे।

रुद्रपुर में कार्यशाला का उद्घाटन दिल्ली पब्लिक स्कूल, रुद्रपुर के प्रधानाचार्य श्री चेतन चौहान ने, सल्ट ब्लॉक में रा०इ०का० खुमाड़ के प्रधानाचार्य श्री हुकम सिंह ने तथा नैनीडांडा में रा०आ०इ०का० धूमाकोट के प्रधानाचार्य श्री आनंद सिंह बिष्ट ने किया। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड भौगोलिक रूप से अत्यंत संवेदनशील राज्य है, इसलिए मौसम विज्ञान संबंधी जागरूकता जीवन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के विशेषज्ञ श्री राघव शर्मा एवं श्री सचिन शर्मा ने तीन दिनों तक शिक्षकों एवं छात्रों को निम्न विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया।

- डिजिटल मौसम निगरानी यंत्र का डिजाइन एवं असेंबली
- यंत्रों के फील्ड–आधारित अनुप्रयोग

- ISRO Bhuvan App द्वारा जलवायु एवं भू–डाटा विश्लेषण

कार्यशाला के उपरांत प्रत्येक विद्यालय को एक डिजिटल मौसम निगरानी यंत्र उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से छात्र एक वर्ष तक स्थानीय पर्यावरणीय डाटा संकलित कर उसे ISRO के साथ साझा करेंगे।

SPECS के प्रतिनिधि श्री शंकर दत्त ने बताया कि रुद्रपुर के साथ–साथ अल्मोड़ा के सल्ट ब्लॉक और पौड़ी के नैनीडांडा ब्लॉक में भी इसी प्रकार की कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। रुद्रपुर ब्लॉक से लगभग 20 विद्यालयों के विज्ञान शिक्षक एवं छात्र प्रतिभागी रहे।

आईएसआरओ भुवन द्वारा उपग्रह–आधारित सीख कार्यशालाओं में छात्रों को भुवन प्लेटफॉर्म का उपयोग सिखाया गया, जिसमें शामिल हैं–

- भू–उपयोग एवं वनस्पति परिवर्तन की निगरानी
- जल संसाधनों का मानचित्रण
- जलवायु एवं भौगोलिक जोखिम विश्लेषण
- बुनियादी GIS अनुप्रयोग
- उपग्रह डाटा की तुलना स्थलीय मापों के साथ इस प्रशिक्षण से छात्रों में विश्लेषणात्मक क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उल्लेखनीय विकास हुआ।

पर्यावरण मॉनिटरिंग यंत्र (EMD) निर्माण प्रशिक्षण

STEM आधारित प्रायोगिक शिक्षा को सशक्त करने के उद्देश्य से छात्रों को स्कूल–स्तरीय Environmental Monitoring Device (EMD) एक लघु मौसम स्टेशन बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। यंत्र में शामिल हैं–

- तापमान, आर्द्रता एवं वायुदाब सेंसर
- वर्षामापक
- गैस / एयर–क्वालिटी सेंसर
- ESP8266 माइक्रोकंट्रोलर
- 3D–प्रिंटेड सुरक्षात्मक बॉडी
- बैटरी / एडॉप्टर आधारित ऊर्जा आपूर्ति

स्थापित होने के बाद यह यंत्र वास्तविक समय में पर्यावरणीय डेटा रिकॉर्ड करेगा, जिसे छात्र उपग्रह डाटा के साथ तुलना कर वैज्ञानिक अध्ययन करेंगे।

मुख्य शैक्षणिक लाभ

- **STEM कौशल विकास** : इलेक्ट्रॉनिक्स, सेंसर एकीकरण, कोडिंग एवं डाटा विश्लेषण
- **जलवायु जागरूकता** : स्थानीय व वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तनों की समझ
- **अनुसंधान प्रवृत्ति** : अवलोकन, रिकॉर्डिंग एवं वैज्ञानिक विश्लेषण

- **सामुदायिक उपयोगिता** : किसान, स्थानीय प्रशासन और पर्यटन सेक्टर हेतु उपयोगी डाटा

राज्यव्यापी 'यंग सिटिजन साइंटिस्ट' नेटवर्क

उत्तराखंड के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थापित ये यंत्र एक सशक्त जलवायु डाटा नेटवर्क का निर्माण करेंगे। विद्यालय सक्रिय क्लाइमेट ऑब्जर्वेशन सेंटर के रूप में कार्य करेंगे, जिससे छात्र वास्तविक जलवायु संरक्षण अभियानों में सहभागी बनेंगे। **"यह कार्यक्रम उपग्रह तकनीक और छात्र–नेतृत्व वाली विज्ञान शिक्षा का प्रेरणादायी संगम है। डेटा आधारित जलवायु समझ विकसित कर हम भविष्य के इनोवेटर्स और पर्यावरण नेताओं को तैयार कर रहे हैं।"**

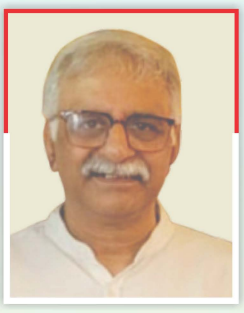

प्रस्तुति - डॉ. बृज मोहन शर्मा
राष्ट्रीय पुरस्कार-प्राप्त विज्ञान संप्रेषक एवं नवोन्मेषक

योग से स्वस्थ जीवन की ओर : ऊषा तिवारी उनियाल का प्रेरणादायक सफर

आज के दौर में जहां हर व्यक्ति की जीवनशैली में तनाव और मानसिक दबाव बढ़ता जा रहा है, वहीं योग एक ऐसा साधन बन चुका है, जो न केवल शरीर को तंदुरुस्त रखता है, बल्कि मानसिक शांति भी प्रदान करता है। इसी योग के माध्यम से एक ऐसी महिला ने न केवल अपने जीवन को बदलने की प्रेरणा ली, बल्कि लाखों लोगों के जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया। हम बात कर रहे हैं 39 वर्षीय ऊषा तिवारी उनियाल की, जिनकी जीवन यात्रा योग के माध्यम से प्रेरणास्त्रोत बनी है।

योग की शुरुआत: एक सरल कदम

ऊषा तिवारी उनियाल का योग से परिचय तब हुआ जब उन्होंने पहली बार टेलीविजन पर योग की विधियों को देखा। शुरुआत में यह केवल एक व्यक्तिगत प्रयास था, जहां उन्होंने योग को अपनी दैनिक जीवनशैली का हिस्सा बनाया। लेकिन जब उन्हें योग से होने वाले शारीरिक और मानसिक लाभ का अनुभव हुआ, तो उन्होंने इसे दूसरों के साथ भी साझा करना शुरू किया। यह सफर 2015 में मुंबई से शुरू हुआ, जब उन्होंने लोगों को योग की महत्वता बतानी शुरू की।

कोरोना काल में योग की अलख

2020 में जब कोरोना महामारी ने दुनिया भर में तबाही मचाई, तो ऊषा तिवारी उनियाल ने योग के प्रति जागरूकता लाने का अपना काम और भी ज्यादा बढ़ा दिया। इस कठिन समय में उन्होंने व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से लोगों को योग से जोड़ने की कोशिश की और योग की सरल विधियों से उन्हें मानसिक शांति और शारीरिक मजबूती की ओर प्रेरित किया। दिल्ली में बसने के बाद भी उनका यह सिलसिला जारी रहा और उन्होंने नेवी वाइव्स ग्रुप को भी इस दिशा में प्रेरित किया।

योग में व्यक्तिगत उपलब्धियाँ

ऊषा तिवारी उनियाल की योग यात्रा ने 2021–2022 में जबरदस्त मील का पत्थर तय किया। उन्होंने 155 सूर्यनमस्कार का रिकॉर्ड स्थापित किया और 26 जनवरी 2022 को 1 घंटा 45 मिनट में कपालभाति का रिकॉर्ड भी बनाया। इसके अलावा, उन्होंने 1 मिनट में 17 सूर्यनमस्कार का विश्व रिकॉर्ड भी तोड़ा, जो उनके योग के प्रति समर्पण और कड़ी मेहनत को दर्शाता है।

योग केंद्र की स्थापना

योग में अपनी गहरी रुचि और विशेषज्ञता के चलते, ऊषा तिवारी उनियाल ने गुजरोवाली, देहरादून में अपना योग केंद्र स्थापित किया, जो पिछले तीन सालों से लोगों को योग के माध्यम से शारीरिक और मानसिक लाभ प्रदान कर रहा है। उनके योग केंद्र में न केवल आम लोग, बल्कि विशेष रूप से सैनिक परिवारों की महिलाएँ भी शामिल होती हैं, जिनके लिए यह एक अद्भुत अनुभव रहा है। इस केंद्र में योग की प्रभावशाली क्लासेस चलती हैं, जो न केवल शरीर के लिए, बल्कि आत्मा की शांति के लिए भी फायदेमंद साबित हो रही हैं।

योग दिवस पर मिली प्रशंसा

21 जून 2022, को योग दिवस के अवसर पर, रिटायर नेवी वाइस एडमिरल आर. हरि कुमार ने ऊषा तिवारी उनियाल की योग यात्रा और उनके द्वारा किए गए योगदान की सराहना की। उनके इस योगदान ने यह साबित किया कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि एक जीवन जीने की कला है, जो हर किसी को शांति और ताजगी प्रदान करती है।

भविष्य की योजनाएँ

ऊषा तिवारी उनियाल का मानना है कि योग एक साधना है, और इस साधना के माध्यम से न केवल अपने जीवन को सुधार सकते हैं, बल्कि दूसरों के जीवन में भी सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। उनका अगला लक्ष्य है कि वह अधिक से अधिक लोगों को योग के प्रति जागरूक करें और उन्हें इसके लाभों से परिचित कराएं। उनका उद्देश्य है कि वे देशभर के छोटे–बड़े शहरों में योग के महत्व को बताएं और हर व्यक्ति तक योग की पहुँच सुनिश्चित करें।

प्रस्तुति: अंकित तिवारी, उपसंपादक

तीर्थाटन

सेम मुखेम : नागराजा मंदिर

भगवान श्री कृष्ण को समर्पित धाम

श्री सेम नागराजा धाम मुख्य द्वार

देवभूमि उत्तराखंड की पवित्र धरती पर अनेक धाम और तीर्थ विद्यमान हैं। उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल के प्रतापनगर क्षेत्र में अवस्थित सेम मुखेम अपनी अनूठी परंपरा और पौराणिक आस्था के कारण विशेष पहचान रखता है। यह मंदिर नई टिहरी से लगभग 80 किलोमीटर एवं उत्तरकाशी से लगभग 63 किलोमीटर दूर है। समुद्र तल से लगभग 8500 फीट की ऊंचाई पर स्थापित यह मंदिर भगवान श्री कृष्ण को समर्पित है और स्थानीय संस्कृति में इसे पांचवें धाम के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस मंदिर को उत्तर का द्वारिका भी कहा जाता है। इस सेम मुखेम मंदिर के रावल एडवोकेट लक्ष्मी प्रसाद सेमवाल के अनुसार आज से 5000 वर्ष पूर्व द्वापर युग में महाभारत युद्ध के पश्चात् भगवान श्री कृष्ण हिमालय क्षेत्र में शांतिवास के लिए आए और उनकी दृष्टि इस रमणीक स्थान पर पड़ी। उसके पश्चात उन्हें यह स्थान बहुत भा गया और वे यहां पर ब्राह्मण के वेश में आए। रमोली क्षेत्र के राजा गंगू रमोला से भगवान श्री कृष्ण ने 9 हाथ एवं 9 बेत जगह मांगी लेकिन गंगू रमोला ने जगह देने से मना कर दिया, जिस पर भगवान श्री कृष्ण नाराज हो गए और गंगू रमोला को श्राप दे दिया। फलस्वरूप गंगू रमोला के राज्य में सूखा और विपत्ति के साथ–साथ सभी गाय, भैंस एवं नौकर पत्थर बन गए। इस तरह की घटना होने पर गंगू रमोला को अहसास हो गया कि यह कोई साधारण मानव नहीं हैं अपितु कोई देवता या भगवान हैं, फिर गंगू रमोला ने भगवान से विनती की और कहा कि मुझसे गलती हो गई और भगवान श्री कृष्ण द्वारा मांगी गई जमीन देने पर सहमति दे दी। भगवान श्री कृष्ण ने गंगू रमोला को माफ कर दिया और गंगू रमोला के राज्य में समृद्धि वापस आ गई एवं कहा कि आज से इस क्षेत्र में मेरी एवं तुम्हारी पूजा इस जगह पर होती रहेगी। रमोली क्षेत्र के गणपति (राजा) के द्वारा ही भगवान श्री कृष्ण का मंदिर सेम मुखेम में बनाया गया। उसी दिन से सेम मुखेम में गंगू रमोला के साहस,सत्य और कर्तव्यनिष्ठा हेतु पूजा होने लगी एवं भगवान श्री कृष्ण की पूजा नागराज के रूप में होने लगी। सेम मुखम का पूरा क्षेत्र प्रकृति की भव्यता से ओतप्रोत है। ऊंचे–ऊंचे पर्वत, बांज– बुरांश एवं थूनेर के घने जंगल, बादलों से घिरी शांत घाटी के दृश्य और पर्वतीय हवाओं का शीतल स्पर्श, ये सब मिलकर भक्तों को आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करते हैं। मंदिर तक पहुंचने का मार्ग भी उतना ही मनोहारी है। सर्पाकार सड़क, बीच–बीच में गांव का सौम्य पर्वतीय जीवन तथा पहाड़ों का स्वच्छ वातावरण इस यात्रा को यादगार बना देता है। सेम नागराजा मंदिर के दर्शन करने के लिए कैंचीनुमा दो किलोमीटर खड़ी चढ़ाई चढ़ कर भक्त यहां आते हैं। प्रत्येक तीसरे वर्ष 10 एवं 11 गते मार्गशीष माह में दो दिवसीय मेले का आयोजन किया जाता है। मेले में हजारों भक्त भगवान श्री कृष्ण और गंगू रमोला की स्मृति में एकत्र होते हैं। ढोल– दमो की धुन, पारंपरिक नृत्य, गढ़वाली लोकगीत तथा ग्रामीण संस्कृति की जीवंतता इस मेले को विशिष्ट बनाती है। इस अवसर पर कई देवस्थान और स्थानीय देवताओं की डोलियां भी मंदिर में पहुंचती हैं, जिससे पूरा क्षेत्र दिव्यता और उत्साह से भर जाता है।

यह मंदिर स्थानीय गढ़वाल क्षेत्र की सांस्कृतिक आत्मा का केंद्र है।भगवान श्री कृष्ण के प्रति पर्वतीय समाज की भक्ति यहां स्पष्ट दिखती है। गंगू रमोला की कथा लोगों को साहस, सत्य और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देती है। इसे पांचवें धाम के रूप में देखना लोक मानस की अनन्य श्रद्धा को भी प्रकट करता है। यहां शेषनाग एवं कालिया नाग की पूजा होती है। कालसर्प दोष और नाग दोष के निवारण के लिए यहां पर भक्त आते हैं और नाग नागिन लाकर विसर्जन करते हैं।

प्रस्तुति-
डॉ. हरीश चंद्र रतूड़ी ,
विभागाध्यक्ष वाणिज्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग,(चमोली)

जी आई टैग : उत्तराखंड के स्थानीय उत्पाद और लोक विरासत का सशक्तिकरण

सांस्कृतिक एवं जैविक विविधता भारत के विभिन्न क्षेत्रों की विशेषता है जो उन्हें एक विशेष पहचान प्रदान करती है। देश के हर क्षेत्र के अपने खास उत्पाद, परंपरा और संस्कृति है जो स्थानीय इतिहास और प्राकृतिक परिस्थितियों को दर्शाते हैं। इन्हीं विशेषताओं की पहचान और संरक्षण के उद्देश्य से भारत सरकार ने भौगोलिक संकेतक (जियोग्राफिकल इंडिकेशन, जीआई टैग) प्रणाली को अपनाया है। जीआई टैग, बौद्धिक संपदा अधिकार (आई.पी.आर.) का एक प्रकार है जो उन वस्तुओं को मिलता है जो विशेष क्षेत्र से संबंधित हैं और जिनमें उस क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषताएं, उत्पादन पद्धति या सामाजिक–सांस्कृतिक परंपरा जुड़ी होती है। जीआई टैग की अवधारणा सैकड़ों साल पुरानी है जब यूरोप के क्षेत्र विशेष के मशहूर उत्पादों का गलत इस्तेमाल और नकल होने के कारण कानूनी सुरक्षा जैसे विचार अपनाने पर सोचा जाने लगा। जीआई सुरक्षा को अंतरराष्ट्रीय पहचान 1883 के पेरिस कन्वेंशन फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ इंडस्ट्रियल प्रॉपर्टी और बाद में 1995 में अंतरराष्ट्रीय व्यापार संगठन के तहत ट्रिप्स (TRIPS- Trade Related Aspects of Intellectual Property Rights) जैसे समझौतों से मिली। भारत में जीआई टैग, जियोग्राफिकल इंडिकेशंस ऑफ गुड्स (रजिस्ट्रेशन एंड प्रोटेक्शन) एक्ट–1999 के तहत दिए जाते हैं, जो 2003 में लागू हुआ था। जीआई टैग कृषि उत्पाद, हैंडीक्राफ्ट्स या अन्य निर्मित उत्पादों को प्रदान किए जाते हैं। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत महानियंत्रक पेटेंट, डिजाइन एवं ट्रेडमार्क्स हर पहलू से परीक्षण के बाद जीआई टैग प्रदान करता है। इसका मौलिक उद्देश्य पारंपरिक ज्ञान एवं कौशल की रक्षा करते हुए क्षेत्रीय उत्पादों को एक कानूनी पहचान प्रदान कर उस उत्पाद के नाम के गलत इस्तेमाल को रोकना है। साथ ही यह स्थानीय कारीगरों एवं कृषकों–व्यापारियों का आय बढ़ाकर उनके हितों की भी रक्षा करता है। देवभूमि उत्तराखंड की भौगोलिक स्थिति उपजाऊ मैदानों से लेकर ऊंचे पहाड़ों तक फैली हुई है। उत्तराखंड के विशेष भौगोलिक अवस्थापना के साथ–साथ यहाँ के कृषि उत्पाद, लोक–कला और संस्कृति की भी एक समृद्ध परंपरा है। अब तक उत्तराखंड के 29 उत्पादों को जीआई टैग प्रदान किया जा चुका है और इसे 100 तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। जीआई टैग मिलने से उस उत्पाद को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर पहचान मिलने के साथ ही उसकी ब्रांडिंग एवं प्रतिस्पर्धा में भी लाभ होता है। इस कारण से राज्य सरकार प्रयास कर रही है कि अधिक से अधिक उत्पादों को जीआई टैग मिल जाए। अब तक जिन 20 कृषि और औद्यानिकी उत्पादों को जीआई टैग प्रदान किया गया है वे हैं– बेडू,बद्री गाय का घी, तेजपात, बासमती चावल, मुनस्यारी का सफेद राजमा, कुमाऊँ का च्यूरा

ऑयल, बेरीनाग की चाय, मंडुवा, झंगोरा, गहद, लाल चावल, काला भट्ट, माल्टा, चौलाई, बुरांश शर्बत, बिच्छू बटी फैब्रिक्स,

पहाड़ी तोर दाल, अल्मोड़ा की लाखौरी मिर्च, रामनगर की लीची और रामगढ़ के आड़ू। इसके साथ ही उत्तराखण्ड के 9 हस्तशिल्प एवं अन्य उत्पादों को भी जीआई टैग मिल चुका है

जिसमें ऐपण कला, रिंगाल क्राफ्ट, भोटिया दन, ताम्र उत्पाद, थुलमा, नैनीताल मोमबत्ती, कुमाऊंनी पिछौड़ा, चमोली रम्माण मुखौटा एवं उत्तराखण्ड लिखाई लकड़ी की नक्काशी सम्मिलित है।

इनके अलावा उत्तराखंड की ओर से भेजे गए 19 उत्पादों को जीआई टैग देने के प्रस्ताव का परीक्षण गतिमान है। उत्तराखंड भारत का पहला राज्य है जिसके अधिकतम 18 उत्पादों को एक साथ 4 दिसंबर 2023 को जीआई टैग प्रदान किया गया। उत्तराखंड अपनी विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों, जैव विविधताएं, पारंपरिक कृषि पद्धतियों और हस्तशिल्प के लिए जाना जाता है। यहां की जलवायु, मिट्टी और स्थानीय ज्ञान मिलकर ऐसे उत्पादों का निर्माण करते हैं जो देश–विदेश में अपनी अलग पहचान रखते हैं। ऐसे में भौगोलिक संकेतक (जीआई टैग) उत्तराखंड के लिए न केवल पहचान का साधन है बल्कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। जीआई टैग उत्तराखंड के पारंपरिक और विशिष्ट उत्पादों को कानूनी संरक्षण प्रदान करता है। इससे बाहरी क्षेत्रों द्वारा इन उत्पादों के नाम और गुणवत्ता की नकल पर रोक लगेगी। राज्य के उत्पादों को जीआई टैग मिलने से उनकी प्रमाणिकता सुनिश्चित होती है और उपभोक्ताओं का विश्वास बढ़ता है। साथ ही स्थानीय कृषकों, कारीगरों और छोटे उत्पादकों को उनके परिश्रम का उचित मूल्य भी प्राप्त होता है। आर्थिक दृष्टि से जीआई टैग ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में रोजगार सृजन में सहायक है। उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य में जहाँ औद्योगिक अवसर सीमित हैं, वहाँ जीआई टैग पारंपरिक कृषि, जड़ी–बूटी, हथकरघा और हस्तशिल्प को बढ़ावा देता है। इससे पलायन की समस्या को कम करने में भी सहायता मिलती है, क्योंकि स्थानीय लोगों को अपने क्षेत्र में ही आजीविका के बेहतर अवसर प्राप्त होते हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से जीआई टैग उत्तराखंड की लोक–परंपराओं, पारंपरिक ज्ञान और विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ता है और पारंपरिक कौशल को जीवित रखने में मदद करता है। साथ ही जीआई टैग पर्यटन को भी बढ़ावा देता है, क्योंकि विशिष्ट स्थानीय उत्पाद पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि जीआई टैग उत्तराखंड के लिए केवल एक कानूनी पहचान नहीं बल्कि सतत विकास, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक संरक्षण का सशक्त माध्यम है। यदि इसके प्रभावी क्रियान्वयन पर ध्यान दिया जाए तो जीआई टैग उत्तराखंड के समग्र विकास में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

प्रस्तुति : डॉ. इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग (चमोली)

सराहनीय

जन औषधि केंद्र

स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांति और जनकल्याण का माध्यम

आज जब स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ आम आदमी तक पहुँचना एक चुनौती बन चुका है और दवाइयों की कीमतें निरंतर बढ़ रही हैं, तब प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना ने एक नई उम्मीद का दीप जलाया है। इस योजना के तहत जन औषधि केन्द्रों का संचालन, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण दवाइयाँ मुहैया कराकर देशभर के नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित कर रहा है। यह योजना अब एक महत्वपूर्ण क्रांति बन चुकी है, जो न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र में, बल्कि समाज में भी जागरूकता और सुधार का काम कर रही है।

जन औषधि केन्द्र ऐसे फार्मेसी स्टोर हैं जहाँ जेनेरिक दवाइयाँ सस्ती दरों पर उपलब्ध होती हैं। ये दवाइयाँ अपने महंगे ब्रांडेड समकक्षों की तरह ही असरदार होती हैं, लेकिन इनकी कीमत 50 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक कम होती है। उदाहरण स्वरूप, जो दवा बाजार में रूपये 800 में मिलती है, वही जन औषधि केन्द्र पर केवल रूपये 80 से रूपये 100 में उपलब्ध हो सकती है। यह पहल उन लोगों के लिए जीवन रक्षक साबित हो रही है जो आर्थिक कठिनाइयों के कारण महंगी दवाइयों का खर्च नहीं उठा पाते थे। शुरुआत में कुछ लोगों में यह भ्रम था कि सस्ती दवाइयाँ कम प्रभावी होंगी, लेकिन अब जन औषधि केन्द्रों के दवाओं पर लोगों का विश्वास दृढ़ हो चुका है। समय के साथ यह साबित हो गया है कि इन दवाओं में वही प्रभाव होता है जो महंगी दवाइयों का होता है। आज आम जनता का मानना है कि सस्ती दवाइयाँ न केवल असरदार होती हैं, बल्कि पूरी तरह से सुरक्षित और विश्वसनीय भी हैं।

आज के समय में, चिकित्सा क्षेत्र में कई बार इंसान की जान के बजाय मुनाफे को प्राथमिकता दी जाती है। बड़ी फार्मा कंपनियाँ अपनी दवाइयों का व्यापार कर रही हैं, जिनकी कीमतें आम आदमी की पहुँच से बाहर होती हैं। इसके परिणामस्वरूप, कई लोग गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए आर्थिक रूप से संघर्ष करते हैं। प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि योजना ने इस कठिनाई को दूर किया है, जिससे कैंसर, हृदय रोग और अन्य गंभीर बीमारियों की दवाइयाँ भी किफायती दरों पर उपलब्ध हो रही हैं। यह योजना दिखाती है कि दवाइयाँ केवल मुनाफे का साधन नहीं, बल्कि जनकल्याण का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती हैं। यह सही है कि कोई भी योजना शुरू में पूरी तरह से परिपूर्ण नहीं हो सकती, लेकिन प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि योजना को लगातार सुधारने और उसे सही तरीके से लागू करने के प्रयास किए गए हैं। समय–समय पर योजना में बदलाव किए जाते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि दवाइयाँ गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित हैं। इसके अलावा, अगर किसी दवा में कोई कमी पाई जाती है, तो उसे त्वरित रूप से सुधारने का प्रयास किया जाता है।

एम्स ऋषिकेश स्थित जन औषधि केन्द्र में रोजाना कई मरीजों को सस्ती और असरदार दवाइयाँ मुहैया करायी जाती हैं। जन औषधि फार्मेसी की टीम यह सुनिश्चित करती है कि दवाइयाँ सही मात्रा और सही तरीके से मरीजों तक पहुँचें और

उनके सभी सवालों का संतोषजनक उत्तर दिया जाए। टीम बताती है कि मरीजों को दवाओं के सही उपयोग के बारे में जानकारी देना और उनकी चिंताओं को दूर करना भी उनकी जिम्मेदारी है। इस पहल से हम यह देख रहे हैं कि मरीज अब आर्थिक बोझ के बिना नियमित इलाज कर पा रहे हैं, जिससे उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है।जन औषधि केन्द्र केवल दवा बेचने का स्थान नहीं हैं, बल्कि यह एक जनसेवा का माध्यम बन चुके हैं।

यह केन्द्र यह संदेश दे रहे हैं कि दवा सस्ती हो सकती है, लेकिन उसकी गुणवत्ता पर कोई समझौता नहीं किया गया है। जन औषधि केन्द्रों ने यह साबित किया है कि अगर दवा सस्ती होगी, तो जीवन आसान हो सकता है। इसके साथ ही, इस योजना के द्वारा समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता भी बढ़ रही है, जिससे लोगों का विश्वास और आत्मसम्मान दोनों ही वापस लौट रहे हैं।प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि योजना ने स्वास्थ्य क्षेत्र में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया है। यह न केवल सस्ती दवाइयाँ उपलब्ध करा रही है, बल्कि लोगों के जीवन में स्वास्थ्य के साथ–साथ आत्मसम्मान और विश्वास भी लौटा रही है। हम सबको मिलकर यह संदेश देना चाहिए कि जन औषधि केन्द्र से दवाइयाँ लेना एक समझदारी भरा कदम है।

अगर दवा सस्ती होगी, तो जीवन आसान होगा।

प्रस्तुति : हिमानी सिंह राजपूत
भेषजज्ञ (फार्मासिस्ट),जन औषधि केन्द्र, एम्स ऋषिकेश

हाईटेक तैयारी

उत्तराखंड अग्निशमन विभाग

जंपिंग कुशन : ऊंची इमारतों में फंसे लोगों को बचाएगा

उत्तराखंड में अब ऊंची इमारतों (हाईराइज बिल्डिंग) में आग लगने या आपात स्थिति में वहां फंसे लोगों को बचाने के लिए विभाग ने हाईटेक तैयारी कर ली है। विभाग ने पहली बार विशेष जंपिंग कुशन खरीदा है। जंपिंग कुशन बहुमंजिला भवनों में आग लगने या किसी भी आपात स्थिति में फंसे लोगों को सुरक्षित नीचे लाने के लिए डिजाइन किया गया है। इसके सहारे लोग 25 मीटर (लगभग 8 से 9 मंजिल) की ऊंचाई से सीधे नीचे कूदकर जान बचा सकेंगे। यह एक ऐसा उपकरण है जिसमें ऊंचाई से कूदने पर व्यक्ति को गंभीर चोट लगने और मृत्यु होने की संभावना बहुत कम हो जाती है। तीन दिसम्बर को देहरादून के फायर स्टेशन में जंपिंग कुशन का डेमो और प्रशिक्षण दिया गया। यह कुशन विशेष रूप से ऐसी परिस्थितियों के लिए तैयार किया गया है जब आग या आपात स्थिति में सीढ़ियों या लिफ्ट से नीचे आना संभव न हो। इस उपकरण की संरचना और एयर प्रेशर सिस्टम ऐसा है कि ऊंचाई से कूदने पर यह शरीर के गिरने की गति (इम्पैक्ट) को सोख लेता है। हवा भरने पर फूले कुशन की ऊंचाई 2. 4 मीटर हो जाती है और जंपिंग सरफेस का व्यास लगभग 4.6 मीटर है। राज्य के 13 जिलों से आये 42 फायर कर्मियों को उपकरण बनाने वाली कंपनी ने इसके उपयोग का प्रशिक्षण दिया साथ ही इसके संचालन, सही तैनाती, हवा भरने की प्रक्रिया और सेफ्टी चेक्स की जानकारी दी। डमी को 25 मीटर से गिराकर जंपिंग कुशन का परीक्षण भी किया गया।

प्रस्तुति :
प्रो. (डॉ.) के.एल. तलवाड़

राखी सिंह राजपूत : कला, खेल और सेवा का अद्वितीय संगम

कला केवल रंगों या चित्रों का खेल नहीं है, यह भावनाओं, संघर्षों और जीत की एक अभिव्यक्ति है। यह विचार उन लोगों से जुड़ा है जो कला के माध्यम से अपने जीवन की कठिनाइयों को सजीव रूप में बदल देते हैं और अगर इस विचार का कोई जीवित उदाहरण दिया जा सकता है तो वह हैं राखी सिंह राजपूत। 16 अगस्त 1990 को टिहरी गढ़वाल के छोटे से गांव गोदी सिराई में किसान परिवार में जन्मी राखी का जीवन एक प्रेरणा बनकर सामने आया है। बीर सिंह राजपूत और सुशीला सिंह राजपूत की सबसे बड़ी संतान, राखी ने हर कदम पर अपनी मेहनत, समर्पण और कला से अपने सपनों को आकार दिया है।

शिक्षा से कला तक : एक अद्वितीय यात्रा

राखी की प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शीशु मंदिर से हुई, जहाँ उन्होंने अपने जीवन की नींव रखी। इसके बाद, नरेंद्र महिला विद्यालय से विज्ञान में 12वीं तक की पढ़ाई की लेकिन विज्ञान की छात्रा होते हुए भी, उनका दिल हमेशा कला में ही बसा रहा। बचपन से ही कला प्रतियोगिताओं में भाग लेने के बाद, उन्हें पुरस्कार मिलते गए और उनकी कलात्मक क्षमताओं ने सभी को प्रभावित किया। राखी के बनाए चित्र केवल कागज पर रंगों की छाया नहीं हैं, बल्कि वे जीवंतता से भरपूर होते हैं। उनके स्केच ऐसे लगते हैं जैसे वे किसी वास्तविक चित्र से कम नहीं। उनके चित्रों में जो भावनाएँ और जीवंतता है, वह किसी को भी सोचने पर मजबूर कर देती है कि ये सिर्फ चित्र नहीं, बल्कि किसी जीवित वस्तु की महक हैं।

खेल में भी सफलता का परचम लहराया

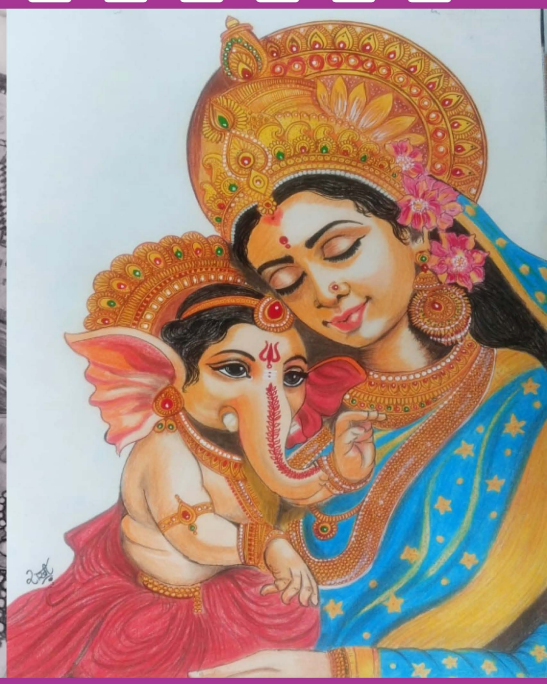

कला के साथ–साथ, राखी ने अपनी खेल प्रतिभा का भी परिचय दिया। बैडमिंटन में उनकी रुचि ने उन्हें कई खेल प्रतियोगिताओं में विजय दिलाई। उनका यह सफल सफर हमें यह सिखाता है कि जीवन में कला और खेल दोनों का संतुलन बनाए रखा जा सकता है और यही संतुलन आत्मविश्वास और सफलता का आधार बनता है।

सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्टता

अपनी 12वीं की परीक्षा के बाद, राखी ने नरेंद्र नगर पॉलीटेक्निक से डी. फार्मा. की शिक्षा पूरी की। वर्तमान में, वह एम्स ऋषिकेश के अमृत फार्मेसी विभाग में फार्मासिस्ट के रूप में अपनी सेवाएं दे रही हैं। उनका यह संयोग केवल एक पेशेवर करियर नहीं, बल्कि समाज सेवा का भी उदाहरण है।

राखी का जीवन यह साबित करता है कि जब किसी के भीतर जुनून हो, तो वह किसी भी क्षेत्र में सफलता पा सकता है। उनके लिए कला और सेवा, दोनों एक साथ चलने वाली धारा हैं, जो उन्हें नए आयाम तक पहुंचाती हैं। वह अपनी व्यस्त दिनचर्या में भी कला के लिए समय निकालती हैं और इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाती हैं।

युवाओं के लिए संदेश

राखी सिंह राजपूत का जीवन युवाओं को एक गहरी शिक्षा देता है। वह कहती हैं, हमेशा अपने सपनों को पीछे मत छोड़िए, चाहे रास्ता कठिन क्यों न हो। कला, खेल और सेवा ये सभी जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। अगर आप इन्हें सही मायने में समझकर अपने जीवन का हिस्सा बना लेते हैं, तो जीवन का हर पल सार्थक हो सकता है। उनकी इस प्रेरणा से यह स्पष्ट है कि जीवन में यदि हम अपनी कला, मेहनत और जुनून को एक साथ जोड़ते हैं, तो न केवल हम अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी निभा सकते हैं।

राखी के जीवन की यह अद्भुत यात्रा हमें यह सिखाती है कि सफलता केवल मेहनत से नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, समर्पण और संघर्ष से हासिल होती है।

प्रस्तुति: अंकित तिवारी, उपसंपादक

देवभूमि उत्तराखण्ड

विश्व की आध्यात्मिक राजधानी बनने के लिए उपयुक्त

राज्य स्थापना के जयंती समारोह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड को आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित करने की बात की, उन्होंने कहा कि यह देवभूमि विश्व की आध्यात्मिक राजधानी के लिए उपयुक्त है और इससे यहां के रीति– रिवाज, कला– संस्कृति, मठ–मंदिर, योग,आयुर्वेद और पौष्टिक श्री अन्न आदि विशिष्टताएं अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क से जुड़ेंगे जो रोजगार और विकास की नई संभावनाएं उत्पन्न करने में सहायक होगा। प्रधानमंत्री की ये बातें इसलिए सटीक बैठती हैं क्योंकि देवभूमि उत्तराखंड अपनी आध्यात्मिक चेतना, प्राकृतिक सौंदर्य, नैसर्गिक शांति और सांस्कृतिक विरासत के लिए विश्व विख्यात है। यहाँ विश्व प्रसिद्ध केदार खण्ड और मानस खण्ड क्षेत्र में अवस्थित प्रमुख केंद्रों में चार धाम जिसमें–केदारनाथ–भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में एक है, बद्रीनाथ भगवान विष्णु का धाम, गंगोत्री मां गंगा का उद्गम स्थल और यमुनोत्री मां यमुना की उद्गम स्थल के अलावा जागेश्वर धाम आदि कैलाश, कैंची धाम, ऋषिकेश– योग, ध्यान और आध्यात्मिक का प्रमुख केंद्र, हरिद्वार– कुंभ नगरी होने के साथ ही योग और साधना केंद्र के

रूप में अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाते हैं। उत्तराखंड के प्रमुख प्राकृतिक पर्यटन स्थलों में कौसानी, पिथौरागढ, रानीखेत, औली, मसूरी, चकराता, नैनीताल, भीमताल आदि क्षेत्र प्रकृति की सौंदर्यता का अनुभव कराते हैं साथ ही देश का टाइगर रिजर्व जिम कॉर्बेट पार्क, सुप्रसिद्ध फूलों की घाटी, हिमालय की जैव विविधता का केंद्र नंदा देवी उद्यान, और राजाजी राष्ट्रीय पार्क पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। साहसिक पर्यटन भी यहाँ बड़ा आकर्षण का केंद्र है, जिसमें रिवर राफ्टिंग, पैराग्लाइडिंग, स्कीइंग, चोपता–तुंगनाथ–चंद्रशिला ट्रैक, पिंडारी ग्लेशियर ट्रैक, रूप कुंड, हर की दून ट्रैक आदि प्रमुख हैं। ये सभी उत्तराखंड को स्वाभाविक रूप से "विश्व की आध्यात्मिक राजधानी" बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं। आवश्यकता है इन क्षेत्रों में सुनियोजित रूप से सुचारु कनेक्टिविटी विकसित की जाय जो विश्व के लोगों को सुविधाजनक और आनंददायक हो ऐसी पहल आर्थिक और सामाजिक विकास को गति देने में भी सहायक होगी और इससे सांस्कृतिक व वैज्ञानिकता चेतना विश्व कल्याण के लिए प्रवाहित होगी । राज्य के आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित होने से रोजगार के व्यापक अवसर सृजित होंगे। योग, ध्यान, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, आध्यात्मिक शिक्षा, वेलनेस टूरिज्म, सांस्कृतिक पर्यटन और धार्मिक आयोजनों से जुड़े क्षेत्रों में लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिल सकता है, इसके अतिरिक्त होटल, परिवहन, गाईड सेवा, स्थानीय उत्पाद, हस्तशिल्प, जैविक कृषि और होम–स्टे जैसी गतिविधियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई ताकत देंगी क्योंकि यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या में हर वर्ष वृद्धि हो रही है कोरोना के बाद के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2021 लगभग दो करोड़ पर्यटक यहाँ आये, 2022 में यह संख्या दोगुनी से अधिक पहुँच गयी लगभग पांच करोड़ पर्यटक यहाँ पहुँचे और 2023 में लगभग 5.96 करोड़ पर्यटक व श्रद्धालु आये और पिछले तीन– वर्ष की अवधि में कुल तेईस करोड़ से अधिक पर्यटक आए और 2025 में भी पर्यटन अच्छी–खासी मात्रा में रहा है। लगातार बढ़ रही पर्यटकों व श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए इन शहरों में परिवहन व्यवस्था, भीड़ प्रबंधन, पार्किंग, ट्रैफिक जाम आदि को नियंत्रित

करने के लिए पुख्ता इंतजाम करने होंगे। यह प्रयास रोजगार की तलाश में हो रहे पलायन को रोकने में भी कारगर सिद्ध होगा । आज उत्तराखंड का पर्वतीय क्षेत्र तेजी से खाली हो रहा है, युवाओं को रोजगार के लिए शहरों और महानगरों की ओर विवश होकर जाना पड़ता है। यदि उन्हें गांव में ही सम्मानजनक आजीविका के अवसर उपलब्ध होंगे, तो वे अपनी भूमि, संस्कृति और परिवार से जुड़े रहकर विकास की मुख्यधारा में शामिल हो सकेंगे। इससे "स्थानीय को रोजगार" की अवधारणा भी साकार होगी। आवश्यकता है कि स्थानीय युवाओं का आध्यात्मिक विकास के विभिन्न विषयों और पहलुओं पर प्रशिक्षण हो ताकि वे कौशलयुक्त हों और इस क्षेत्र में उद्यम संचालित कर सकें।

हालांकि, इस दिशा में आगे बढ़ते समय पर्यावरण संरक्षण और संतुलित विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। अनियंत्रित निर्माण, भीड़भाड़, कचरा प्रबंधन की अनदेखी और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन इस आध्यात्मिक भूमि की आत्मा को नुकसान पहुँचा सकता है। इसलिए पर्यटन विकास के साथ–साथ सख्त पर्यावरणीय नियमानुसार योजनाएं लागू करना आवश्यक है। राज्य सरकार द्वारा दिसंबर माह से राज्य में प्रवेश करने वाले वाहनों से ग्रीन सेस लेने का निर्णय इस दिशा में एक प्रभावी कदम सिद्ध होगा और इसे आध्यात्मिक राजधानी की दिशा में पहला कदम समझा जा सकता हैं। दिसंबर माह से राज्य में प्रवेश करने वाली बाहरी प्रदेशों की कारों से रू.80, बस से रू.140, डिलीवरी वैन से रू.250, ट्रकों से रू120– रू.700 आकार के अनुसार ग्रीन सेस शुल्क लिया जायेगा। यह प्रयास राज्य की नैसर्गिक सुंदरता और पर्यावरण को स्वच्छ रखने में सहायक सिद्ध होगा इसलिए राज्य अब सिर्फ तीर्थ यात्रा केंद्र तक ही सीमित नहीं है बल्कि अब यहाँ अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक, योग और वेलनेस केंद्रों को विकसित करने के लिए दीर्घकालिक नीति निर्माण की आवश्यकता है ।

प्रस्तुति : प्रो.एच.सी.पुरोहित
समन्वयक, सेंटर फॉर हिन्दू स्टडीज,
दून विश्वविद्यालय, देहरादून

उपलब्धि

डॉ.अनिल प्रकाश जोशी को मिला

इंसा-फेलो ऑफ द नेशनल अकादमी सम्मान

हेस्को (Himalayan Environmental Studies and Conservation Organization) के संस्थापक पर्यावरणविद डॉ.अनिल प्रकाश जोशी को देश की सर्वोच्च संस्था भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी – इंसा ने फेलो ऑफ द नेशनल अकादमी से सम्मानित किया है। चार दिसंबर को जेएनयू विश्वविद्यालय नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में यह सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान एक जनवरी 2026 से प्रभावी होगा। अकादमी हर वर्ष देशभर से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वैज्ञानिकों का चयन करती है। डॉ.अनिल प्रकाश जोशी पिछले चार दशकों से ग्रामीण विकास, पारिस्थितिकी संरक्षण, जल प्रबंधन, नवीनीकरण ऊर्जा और समाज आधारित विज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत कार्य कर रहे हैं। डॉ. जोशी भारत सरकार की ओर से पद्मश्री और पद्मभूषण से भी नवाजे जा चुके हैं। उन्होंने 1986 में हिमालयी पर्यावरण के

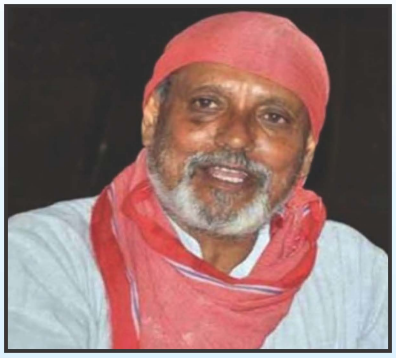

संरक्षण और स्थानीय समुदायों के लिए स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हेस्को की स्थापना की थी। हेस्को का काम अनुसंधान, शिक्षा,पर्यावरण चुनौतियों का समाधान करना है। उन्होंने पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक प्रगति के साथ जल संरक्षण, जैविक खेती और बायोगैस के उपयोग को बढ़ावा दिया। उन्होंने जीडीपी के समानांतर जीईपी(सकल पर्यावरण उत्पाद) की अवधारणा प्रस्तुत की,जो पारिस्थिकी तंत्र के विकास को मापता है। उन्हें माउंटेन मैन और अशोका फेलो के रूप में भी जाना जाता है। Indian National Science Academy & INSA 1935 से गठित वैज्ञानिक संगठन है,जिसे भारत सरकार ने 1968 में मान्यता दी। भारत सरकार के सभी वैज्ञानिक मुद्दों में इंसा की भागीदारी रहती है।

प्रस्तुति : प्रो. (डॉ.) के.एल. तलवाड़

लेखक गांव में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
उत्तराखंड के अविस्मरणीय साहित्यकार

उत्तराखंड की साहित्यिक धरोहर को संरक्षित और सम्मानित करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ और लेखक गांव, देहरादून के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'उत्तराखंड के अविस्मरणीय साहित्यकार' ने उत्तराखंड की समृद्ध साहित्यिक परंपराओं को पुनः जागृत किया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और भारत के पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने किया, जिनके शब्दों ने उत्तराखंड के साहित्यकारों और उनके योगदान के महत्व को और अधिक स्पष्ट किया। डॉ. निशंक ने कहा कि 'जो समाज अपने साहित्यकारों और साहित्य को भूल जाता है, वह समाज कभी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकता।' उनके इस वक्तव्य ने साहित्य और समाज के बीच गहरे रिश्ते को उजागर किया, जो इस संगोष्ठी के मुख्य विषय के रूप में सामने आया।

संगोष्ठी के पहले दिन, उत्तराखंड के प्रसिद्ध साहित्यकारों जैसे डॉ. पार्थ सारथी डबराल, डॉ. गोविंद चातक, डॉ. शिव प्रसाद डबराल, गोविंद बल्लभ पंत, और शिवानी के साहित्य पर विस्तार से विमर्श हुआ। इन साहित्यकारों ने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि उन्होंने भारतीय साहित्य के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। डॉ. निशंक ने इस अवसर पर बताया कि लेखक गांव देश के सभी प्रमुख राष्ट्रीय और प्रदेश स्तरीय भाषा संस्थानों और अकादमियों के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर कर रहा है, ताकि साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने संयुक्त रूप से अकादमिक और शैक्षिक गतिविधियों की आवश्यकता पर बल दिया। उनका मानना था

कि उत्तराखंड के साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य को जिस स्तर तक समृद्ध किया है, उसका दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता, लेखक और नैनीताल के जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने उत्तराखंड के साहित्यिक मानचित्रण (लिटरेरी मैपिंग) की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि हम उत्तराखंड के साहित्यकारों और उनकी लेखन शैली को सही रूप से पहचान सकें।उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की प्रधान संपादक डॉ. अमिता दुबे ने उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के साहित्यकारों और उनके साहित्य को एक साझा विरासत के रूप में देखा। उन्होंने कहा कि दोनों प्रदेशों की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना एक–दूसरे से गहरी तरह से जुड़ी हुई है। इस प्रकार, दोनों प्रदेशों के साहित्यकारों को एक मंच पर लाकर उनकी रचनाओं को सम्मानित करना अत्यंत आवश्यक है।

इस संगोष्ठी में डॉ. सुधारानी पांडेय, पूर्व कुलपति, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, ने भी अपने विचार व्यक्त

किए और कहा कि हिंदी साहित्य की भावभूमि वैदिक साहित्य से जुड़ी हुई है, और उत्तराखंड के साहित्यकारों की रचनाओं को समझने के लिए संस्कृत साहित्य की समझ भी महत्वपूर्ण है। इस तरह, संगोष्ठी ने उत्तराखंड के साहित्यिक इतिहास और उसकी सांस्कृतिक धरोहर को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। समापन सत्र में डॉ. देवेन्द्र कुमार सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार, ने संगोष्ठी के समापन वक्तव्य में कहा, यह संगोष्ठी उत्तराखंड के समृद्ध साहित्यिक धरोहर को याद करने और उसे भविष्य पीढ़ी तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण कदम है। इस विचार ने साहित्य के महत्व को स्पष्ट किया, जो न केवल हमारे सांस्कृतिक धरोहर को बचाने में सहायक है, बल्कि समाज के सकारात्मक चिंतन और समृद्धि के लिए भी आवश्यक है।समापन सत्र में आयोजित कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार सोमवारी लाल उनियाल ने कविता को साहित्य की आत्मा बताया। इस सत्र में मदन मोहन डुकलान, प्रोफेसर कल्पना पंत, मीरा नवेली, प्रोफेसर सिद्धेश्वर सिंह, डॉ. किरण सूद, शिव मोहन सिंह, मोनिका शर्मा, डॉ. नूतन स्मृति और भारती मिश्रा ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।संगोष्ठी के आयोजन से संबंधित डॉ. सविता मोहन (संयोजक), पूजा पोखरियाल (समन्वयक) और अन्य आयोजक समिति के सदस्यों ने सभी प्रतिभागियों और उपस्थित साहित्यकारों का आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी का संचालन डॉ. दिनेश शर्मा और भारती मिश्रा ने किया।

प्रस्तुति: अंकित तिवारी, उपसंपादक

पर्यटन

सिटी फॉरेस्ट पार्क : एमडीडीए की हरित पहल

देहरादून में सहस्त्रधारा रोड स्थित सिटी फॉरेस्ट पार्क, जो लगभग 12.45 हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित किया गया है,देहरादून की नई पहचान बन रहा है। इसे आधुनिक हरित विकास, पर्यावरण संरक्षण और शहरी स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण(एमडीडीए) द्वारा तैयार किया गया है। यह पार्क प्रकृति,योग,आयुर्वेद, फिटनेस, बच्चों के खेल,पर्यटन और शांत वातावरण का अनूठा मिश्रण है। इस पार्क का विकास इस तरह किया गया है कि प्राकृतिक ढलान, पेड़–पौधों का आवरण, मौसमी नाले और मिट्टी की बनावट को यथावत रखा जा सके। इस कारण यहां का हर कोना जंगल जैसा सौम्य और शांत अनुभव प्रदान करता है। पार्क में 1.2 किमी वन–वॉक फिटनेस ट्रेल, 3. 5 मीटर चौड़ा प्राकृतिक परिधि मार्ग, आधुनिक साइकिल ट्रैक, प्राकृतिक ढलानों में बना ड्रंम, झूला पुल,ध्यान एवं योग स्थल, एक्यूपंचर जोन, रंग–बिरंगे फूलों की क्यारियां,खुले में सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु ओपन एयर थियेटर, आकर्षक ट्री हाउस,बांस गजबो, स्केटिंग रिंग, कैफेटेरिया,जैव विविधता को समर्पित वेटलैंड, रिस्टोरेशन जोन जैसी सुविधाओं के कारण यह पार्क स्वस्थ जीवनशैली, मनोरंजन, शिक्षा और पर्यटन चारों को एक साथ समाहित करता है। एमडीडीए ने इस पार्क को आधुनिक हरित अवसंरचना का उत्कृष्ट मॉडल बनाने का लक्ष्य रखा है। पार्क का प्रवेश द्वार महासू देवता मंदिर की शैली में तैयार किया गया है,जो सांस्कृतिक सौंदर्य को आधुनिकता के साथ जोड़ता है। पार्क में बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों सहित हर आयु वर्ग की सुविधाओं का ध्यान रखा गया है।

प्रस्तुति :
श्रीमती नीलम तलवाड़

हरित सौंदर्य कौशल

सौंदर्य प्रसाधन सामग्री निर्माण की प्रकृति आधारित वैज्ञानिक प्रक्रिया

प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान बनाए गए साबुन

आज का युग प्रकृति संरक्षण और सतत विकास की ओर अग्रसर है, सौंदर्य उद्योग भी इस परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है, हरित सौंदर्य कौशल का मूल उद्देश्य है, कि ऐसे सौदर्य उत्पादों को विकसित करना जो प्राकृतिक, सुरक्षित, हानिकारक रसायनों से मुक्त, पर्यावरण सम्मत और त्वचा के लिए लाभदायक हो, इसी दिशा में साबुन, लोशन और जैल, हरित विधि से निर्माण एक महत्वपूर्ण कौशल है, जो न केवल रोजगार के अवसर बढ़ाता है बल्कि छात्र–छात्राओं के स्वावलंबन की दिशा में भी नया मार्ग प्रशस्त करता है।

हरित सौंदर्य कौशल का महत्व निम्नांकित रूप में है।

1. प्रकृति आधारित विकल्प– पैराबीन, सल्फेट, कृत्रिम सुगंधों जैसे रसायनों के स्थान पर प्राकृतिक तेल, बटर, हर्बल अर्क, सुगंधित तेलों, और रंगो का प्रयोग किया जा सकता है।

2. स्थानीय संसाधनों का उपयोग : इस विधि स्थानीय संसाधन जैसे नीम, तुलसी, तेल,हल्दी, पपीता का पाउडर , चंदन, बुरांश और एलोवेरा इत्यादि का उपयोग कर स्थानीय संसाधरी के उत्पादन में भी बढ़ावा दिया जा सकता है।

3. सुरक्षित एवं त्वचा अनुकूल उत्पाद : हरित सौंदर्य विधि से बनाये गये उत्पाद, सभी आयुवर्ग और त्वचा के प्रकार के लिए सुरक्षित, एलर्जी तथा अन्य साइड इफैक्ट्स की जोखिम में कमी के होते हैं।

4.कौशल विकास और उद्यमिता : यह प्रक्रिया कम लागत से, घर में ही कम संसाधनों से छात्र छात्राओं को स्वालंबी बनाने में महत्वपूर्ण कदम है।

5. अवशिष्ट पदार्थों में कमी : इस प्रक्रिया में अवशिष्ट पदार्थ की मात्रा लगभग शून्य होती है, तथा जिससे गारबेज को विनष्ठ करने की समस्या नही रहती है।

साबुन तथा डिटरजेंट्स क्या है ?

संक्षेप में, रासायनिक रूप से, साबुन, उच्च अणुभार वाले वसीय अम्लों के सोडियम तथा पोटेशियम लवण हैं, जोकि तेल या वसा की सोडियम हाइड्राक्साइड या पोटेशियम हाइड्राक्साइड के साथ अभिक्रिया से बनाया जाता है, जिसे साबुनीकरण कहा जाता है।

तेल / वसा+सोडियम / पोटेशियम हाइड्राक्साइड →'साबुन' +ग्लिसरीन

उच्च कार्बन युक्त वसीय अम्लों. ग्लिसरीन के सोडियम या पोटेशियम लवण 'साबुन'

जबकि डिटरजेंट्स में उच्च कार्बन युक्त बेंजीन सल्फोनिक अम्ल की सोडियम या पोटेशियम हाइड्राक्साइड से क्रिया कर प्राप्त लवण है।

हरित दृष्टिकोण से साबुन को निम्नांकित तीन विधियों से बनाया जाता है –

1. गरम विधि (Hot Process) – इस विधि में साबुन को गरम करके पकाया जाता है जिससे साबुनीकरण की प्रक्रिया जल्दी होती है जिससे मिश्रण गाढ़ा होकर जैल अवस्था में पहुंच जाता है, पकने के बाद इसमें रंगो के लिए हर्बल सामग्री जैसे पपीते, हल्दी, गुलाब, नीम इत्यादि का अर्क या पाउडर तथा सुगंधित तेलों को मिलाया जाता है फिर सांचों में डालकर 24 घंटे बाद निकाल कर 7–10 दिनों में उपयोग में लाया जा सकता है इस प्रक्रिया से निर्मित साबुन मजबूत और लम्बे समय तक टिकने वाला होता है।

2. ठंडी प्रक्रिया (Cold Process)

यह सबसे लोकप्रिय तथा पारंपरिक विधि है, इसमें तेल

को हल्का गरम किया जाता है और अलग बर्तन में सोडियम हाइड्रॉक्साइड को धीरे–धीरे पानी मिलाकर एक विलयन बनाया जाता है. तेल तथा सोडियम हाइड्राक्साष्ड का तापमान लगभग (38–45 सेन्टीग्रेट) तक होने पर एक साथ मिलाने से गाढ़ा होने तक हैंड ब्लेडर से चलाया जाता है। तत्पश्चात सांचो में डालकर 24–48 घंटो तक सेट होने दिया जाता है और लगभग 25–30 दिनों तक क्योरिंग के लिए रख देते हैं, जिससे साबुनीकरण की प्रक्रिया ठीक से हो सके। इस प्रक्रिया से बने साबुन की प्राकृतिक सामग्री संरक्षित रहने के साथ, अधित माइस्चराजिंग, त्वचा अनुकूल, रसायन–मुक्त तथा टिकाऊ होता है। इस अवस्था में इसने प्राकृतिक रंग, (रंगीन साबुन) जिंक आक्साइड घोल (सफेद) तथा सुगंधित तेलों प्राकृतिक को मिलाया जाता है।

3.मेल्ट तथा पोर विधि (Melt and Pour Process)

इस विधि में बाजार में उपलब्ध ग्लिसरीन बेस्ड साबुन, जिसे बेस साबुन भी कहा जाता है, उसे छोटे–छोटे टुकड़ों में काट कर, माइक्रोबेव अथवा डबल वॉयलर में पिघलाया जाता है उसके पश्चात उसमें विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक रंग, जड़ी–बूटी, बटर आयल मिलाकर सांचे मे डालकर, 1–2 घंटे में जमने के लिए छोड़ दिया जाता है जिससे तुरन्त उपयोग योग्य साबुन बन जाता है।

सामान्यतः साबुन बनाने के लिए, बादाम, एवोकोडा, कास्टर, कोका बटर,नारियल हेंम्प, मैंगो बटर,शेया बटर,सोया वेक्स , सनफ्लावर, आलिव,बटर, सोमा वेक्स, तथा राइस बेन तेलों का प्रयोग किया जाता है.

साबुनीकरण के प्रयुक्त सोडियम हाइड्राक्साइड लगभग 90 प्रतिशत तक शुद्ध होना आवश्यक है।

हरित दृष्टिकोण से लोशन और जैल निर्माण निम्नवत किया जाता है–

हर्बल लोशन का निर्माण : हर्बल लोशन बनाने में मुख्य रूप से बादम का जोजाबा तेल, एलोवेरा जैल और विटामिन–E बीज वैक्स शेया बटर तथा गुलाब मा लेवेंडर तेल की आवश्यकता होती है, तेल और वीज वैक्स को गरम करके इसमें हल्का गरम करके गुलाब जल धीरे–धीरे मिलाकर लगातार चलाते रहना है, और एलोवेरा जैल तथा विटामिन E मिलाकर ठंडा होने के लिए रख देते हैं।इस प्रकार से निर्मित लोशन त्वचा को पोषण एंटी–एजिंग गुणों से युक्त तथा सभी देने वाला मौसमों में उपयोगी होता है।

हर्बल जैल का निर्माण– हर्बल जैल बनाने में एलोवेरा पल्प, तुलसी/नीम का अर्क, ग्लिसरीन, प्राकृतिक थिकनर जैंथन गम (Xanthan Gum) तथा सुंगधित तेलों इत्यादि की आवश्यकता होती है, इसमें एलोवेरा को छानकर शुद्ध जैल प्राप्त कर इसमें नीम/तुलसी का अर्क मिलाने के बाद थिकनर तथा ग्लिसरीन मिश्रण को डाल दिया जाता है, इन सब को मिलाकर इसमें सुंगधित तेल मिलाने से एक जैल प्राप्त होता है, इस प्रकार प्राप्त जैल चेहरे पर तुरंत ठंडक, और नमी के साथ मुंहासे तथा संक्रमण में भी लाभदायक होता है, यह जैल बालों के भी उपयोगी होता है। उपरोक्त सभी प्रकार के हर्बल उत्पादों को बनाने के लिए, स्वच्छ तथा सैनिटाइज्ड वातावरण होना अति आवशयक है मास्क, दस्ताने तथा एप्रन का उपयोग होना चाहिये । स्टील तथा काँच के बर्तनों/उपकरणों का प्रयोग, सही मात्रा और सही तापमान पर काम करना चाहिये।हरित सौंदर्य कौशल के माध्यम से साबुन, लोशन और जैल का निर्माण एक ऐसा कौशल है जो विज्ञान, प्रकृति तथा उद्यमिता तीनों को एक साथ जोड़ता है। यह पर्यावरण– सम्मत, स्वास्थप्रद और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत सफल हो सकता है।

इससे अधिकांश छात्र–छात्रायें कम बजट तथा कम संसाधनो में इस कौशल को अपना कर एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान कर सकते हैं।उपरोक्त समस्त जानकारियां डॉ. हेमा भण्डारी, एसोसिएट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान मैत्रयी महाविद्यालय, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, द्वारा श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के रसायन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान छात्र–छात्राओं को स्वालम्बी बनाने के लिए हेन्ड्स ऑन ट्रैनिंग के आधार पर संकलित कर प्रस्तुत की जा रही है।

प्रस्तुतिः प्रो. एस.पी.सती
विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष
विज्ञान संकाय, श्रीदेव सुमन
उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय

चलती छेनी बोलती विरासत : दर्शन लाल की अद्भुत काष्ठ कला

उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक धरोहर केवल उसके पर्वतों, मंदिरों और लोकगीतों में ही नहीं बसती, बल्कि उन हाथों में भी जीवित है जो विरासत में मिली परंपरा को आकार देते हैं। काष्ठ कला–लकड़ी पर उकेरी जाने वाली सूक्ष्म नक्काशी इसी धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे सदियों तक स्थानीय शिल्पियों ने संजोए रखा है। आधुनिकता की इस दौड़ में आज भी इस परंपरा और विरासत को आगे बढ़ाने वाले हैं चमोली जनपद में गैरसैंण विकासखण्ड के दुबतोली (बैनोली) गांव के निवासी दर्शन लाल, जिनकी छेनी और हथौड़ी केवल लकड़ी को तराशती ही नहीं, बल्कि उनके द्वारा निर्मित खोली, डोली, तिबारी, रोटाना, सेमली परोठी आदि इस संस्कृति को नया रूप दे रहे हैं। "चलती छेनी बोलती विरासत" केवल उनके काम की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उस जीवंत परंपरा का प्रतीक है जिसमें हर चौखट, हर मोरी और हर नक्काशी एक कहानी कहती है पहाड़ की, समाज की और संस्कृति की। एक जून 1977 को दुबतोली (बैनोली) पो. आ. मलेठी गैरसैण चमोली में जन्मे दर्शन लाल बताते है कि वे पिछले 35 वर्षों से वे इस काष्ठ कला के कार्य से जुड़े हैं और लगातार इस कार्य को कर रहे हैं। उन्होंने यह काष्ठ कला का कार्य विरासत में सीखा है, उनके पिता गजपाल मिस्त्री तथा दादा घँतू मिस्त्री इसी कार्य को करके अपना जीवन निर्वाह करते थे।

दर्शन बताते हैं कि वे मुख्य रूप से तिबारी (पहाड़ी घरों का बैठक), खोली (दरवाजे की चौखट), दुल्हन की डोली,

चौकी, रोटाना, लकड़ी पर मूर्तियां,(गणेश, नारायण, शिव, दुर्गा माता), सांदण की चौकी, सेमली परोठी या दही पट्टी (जिसे सगाई व शादी जैसे शुभ कार्य पर दही व जौ भरकर ले जाया जाता है), पहाड़ी पठाल के मकान आदि का निर्माण स्वयं अपनी हस्त कला से करते हैं। वे बताते हैं कि ये सभी हमारी उत्तराखण्ड की धरोहर हैं। इन सभी चीजों का उत्तराखण्ड के लोक जीवन और संस्कृति से गहरा संबंध है। पुराने घरों की चौखट जिसे खोली कहा जाता है साढ़े चार फिट से 5 फिट तक होती थी जहां खोली के ऊपर भगवान गणेश की मूर्ति बनी होती थी और घर के अंदर जाने वाला हर व्यक्ति सिर झुकाकर अंदर जाता था। इस प्रकार हर शुभ कार्य में प्रथम पूजा खोली की ही होती थी। पानी की भरी गगरी को सिर झुकाकर खोली में प्रवेश करना भी शुभ माना जाता था। खोली के साथ ही हर घर में तिबारी (बैठक) बनी होती थी जिसे पुराने जमाने का ड्राइंग रूम कहा जा सकता है। तिबारी वाला घर एक शान मानी जाती थी हर व्यक्ति इसे बनाने में सक्षम नहीं होता था। लेकिन ये सभी विरासत की चीजें भले ही विलुप्त होती जा रही हैं लेकिन विरासत को बचाए रखने वाला यह सिपाही आज भी इसे बचाने में लगा है।

दर्शन लाल बताते हैं कि खोली का गणेश और मोरी का नारैण सभी व्यक्तियों के लिए केवल सुनने वाली चीज रह गई है। खोली बनाने के लिए तुन, हल्दू, देवदार आदि की लकड़ी उपयुक्त होती है। इसे निर्मित करने के लिए विभिन्न चरणों से होकर गुजरना पड़ता है। लकड़ी पर सबसे पहले नाप लेकर गुणियां ढाल लिया जाता है इसके बाद छाप लगाने के बाद नक्कासी की जाती है और अंत में इसे जोड़कर तैयार किया जाता है। उत्तराखण्ड में चीड़ की लकड़ी पर्याप्त मात्रा में है लेकिन इस पर नक्काशी न हो पाने के कारण इससे खोली

और तिबारी का निर्माण नहीं किया जा सकता है। दर्शन लाल बताते है कि वह आज भी इस कार्य को अपने परंपरागत हथियार छेनी, हथौड़ा, प्रकार, फीता, स्केल आदि से कर रहे हैं, हालांकि रंदा मशीन और 4 इंच के ग्रेंडर कटर मशीन जैसे आधुनिक हथियार होने से वह इस कार्य को अब कुछ आसानी से कर पा रहे हैं। वे बताते है कि एक खोली बनाने में दो से ढाई महीने तक का समय लग जाता है। लकड़ी सहित इस खोली की कीमत 70 से 80 हजार तक हो जाती है। उनके इस कार्य को प्रत्यक्ष सरकारी सहायता नहीं मिली लेकिन **जब से सरकार ने होम स्टे योजना को शुरू किया तब से उनके कार्य को भी महत्व मिलने लगा है।** आज लोग अपने होम स्टे में 10 फिट तक ऊंची खोली बनवा रहे हैं इसके लिए दर्शन लाल प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्री को बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं जिनके सौजन्य से इस प्रकार की योजना शुरू हुई। वे बताते हैं कि पूर्वजों से विरासत में सीखे इस कार्य में वे पारंगत हैं आज तक कोई भी खोली–मोरी या तिबारी निर्माण उनके लिए चुनौती का नहीं लगा। साथ ही वे बताते हैं कि लगभग 8 साल पहले देहरादून में एक कर्नल साहब की खोली का निर्माण जब उन्होंने किया था तो वह खोली बहुत ही लाजवाब बनी थी। इसी प्रकार पौड़ी के थलीसैंण में भी लगभग 5 साल पहले उन्होंने एक अपने जीवन की यादगार खोली का निर्माण किया था।

उत्तराखण्ड की संस्कृति का यह सपूत दुख इस बात पर जताता है कि नई पीढ़ी इस कार्य में रूचि नहीं ले रही है। एक समय उनका पूरा दुबतोली गांव इस कार्य के मिस्त्री लोगों से भरा था लेकिन आज केवल वह अकेले इस कार्य को कर रहे हैं। नई पीढ़ी को तुरंत फायदा चाहिए होता है लेकिन इस कार्य में कभी–कभी ऐसी नौबत भी आती है कि एक साल तक उत्पाद बिकता ही नहीं है। पलायन की मार और उचित बाजार का न होना भी इस कार्य में कम रूचि का एक कारण है। वर्ष 2000 तक यह कार्यक्षेत्र सामान्य था लेकिन 2000 से 2015 तक यह लगातार कम होता गया 2015 के बाद सरकार की होम स्टे योजना के बाद आज पुनः यह कार्य धीरे–धीरे आगे बढ़ रहा है। वे बताते हैं कि आज वह खुद जगह–जगह अपनी प्रदर्शनी लगा रहे हैं सरकार भी मदद कर रही है। लेकिन स्थानीय संस्थाओं की तरफ से आज तक दर्शन को कोई मदद नहीं मिल पायी है। आज इस क्षेत्र में कई चुनौतियों के कारण यह विलुप्ति के कगार पर है। कच्चा माल मिलना लगातार समस्या बनाता जा रहा है सरकार को चाहिए कि वह इस कला के कच्चे माल में कुछ रियायत दे दे। साथ ही समय पर निर्मित उत्पाद नहीं बिकता है तो इस कला में अरुचि पैदा हो जाती है। साथ ही सरकार यदि स्कूलों में भी छोटे स्तर पर इस कला को सिखाने का मौका दे तो उत्तराखण्ड की यह विरासत बच सकती है। दर्शन लाल को अब तक वर्ष 2016–17 में काष्ठ कला में स्टेट अवार्ड, 2020–21 में शिल्प रत्न पुरस्कार,नंदा गौरा सम्मान 2025 आदि पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। वे बताते हैं कि यह हमारी संस्कृति की पहचान है यदि हमारी सरकार और अधिकारी इसे बचाने की सोचें तो सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे इस दिशा में वे चमोली जनपद के पूर्व मुख्य विकास अधिकारी अभिनव शाह की तारीफ करते हैं जिन्होंने दर्शन को इस कार्य हेतु एक प्रशिक्षणदाता के रूप में जोशीमठ तहसील में नियुक्त किया था। वे बताते हैं कि वे यह भी चाहते थे कि यात्रा काल के दौरान यदि यात्रा मार्ग पर इस कला की स्टॉल के माध्यम से प्रदर्शनी लगाई जाय तो हमारी संस्कृति की पहचान देश विदेश तक फैल सकती है। इससे पर्यटन भी बढ़ेगा और

रोजगार का नया सृजन भी होगा। यदि इस कला को बचाना है तो नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए हमें कुछ नया करना होगा जैसे हम प्रत्येक विकास खण्ड के किसी एक सरकारी कार्यालय को खोली तिबारी के रूप में निर्मित कर सकते हैं।

इस प्रकार दर्शन लाल की काष्ठ कला केवल लकड़ी का आकार नहीं बदलती, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही सांस्कृतिक स्मृतियों को जीवंत बनाती है। उनकी छेनी की हर चोट में परंपरा, धैर्य और गहरी साधना का स्पर्श दिखाई देता है। आधुनिकता के दौर में भी उन्होंने इस विरासत को न केवल सुरक्षित रखा है, बल्कि नई पहचान भी दिलाई है। उनके कार्यों में उत्तराखंड के लोक जीवन, प्रकृति और सरलता की सच्ची झलक मिलती है। उनकी कला आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और संरक्षण का संदेश देती है। निस्संदेह दर्शन लाल की 'चलती छेनी' सच में हमारी 'बोलती विरासत' है।

प्रस्तुति-
कीर्तिराम डंगवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

उपलब्धि

ग्राफिक एरा के डा. कमल घनशाला को मिला ESQR अवार्ड

ग्राफिक एरा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन डॉ. कमल घनशाला ने एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रोशन किया है। दुबई में आयोजित एक भव्य समारोह में उन्हें ESQR क्वालिटी अचीवमेंट अवॉर्ड 2025 से सम्मानित किया गया, जिससे ग्राफिक एरा की वैश्विक पहचान में एक और उल्लेखनीय उपलब्धि जुड़ गई है। यूरोपियन सोसाइटी फॉर क्वालिटी रिसर्च (ESQR) यह पुरस्कार दुनिया भर की प्रतिष्ठित संस्थाओं और दूरदर्शी नेताओं को प्रदान करती है, जो अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के प्रति असाधारण प्रतिबद्धता दिखाते हैं और अपने क्षेत्रों में सार्थक प्रगति लाते हैं।

डॉ. कमल घनशाला को मिला यह सम्मान उनके रूपांतरणकारी नेतृत्व को दर्शाता है, जिसके माध्यम से वे भारतीय उच्च शिक्षा को एक मजबूत और सम्मानित वैश्विक पहचान दे रहे हैं। यह पुरस्कार उनके दूरदर्शी नेतृत्व, नवाचारपूर्ण सोच और अकादमिक उत्कृष्टता के प्रति अटूट समर्पण का प्रमाण है। यह भी साबित करता है कि डॉ. घनशाला सिर्फ एक सफल संस्थापक और उत्कृष्ट प्रशासक ही नहीं, बल्कि गुणवत्ता, नवाचार और सामाजिक प्रगति जैसे मूल्यों के प्रतीक भी हैं, जिन्होंने ग्राफिक एरा को विश्वस्तरीय शिक्षा संस्थान के रूप में स्थापित किया है। डॉ.कमल घनशाला को यह पुरस्कार ESQR के अध्यक्ष डेविड एन्ट्रैक ने प्रदान किया। यह समारोह 14 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आयोजित हुआ।

ग्राफिक एरा डीम्ड यूनिवर्सिटी ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लगातार अपनी पहचान मजबूत की है। NIRF यूनिवर्सिटी रैंकिंग में इसने 48वां स्थान प्राप्त किया है और पिछले छह वर्षों से भारत की शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों में अपनी जगह बनाए रखी है। हाल ही में, ग्राफिक एरा ने QS सस्टेनेबिलिटी रैंकिंग 2025 में भारत में 41वां स्थान हासिल किया है, जिससे इसकी वैश्विक अकादमिक प्रतिष्ठा और मजबूत हुई है। ग्राफिक एरा परिवार इस उपलब्धि से अत्यंत गौरवान्वित और प्रसन्न है।

प्रस्तुति-
प्रो. जानकी पंवार, सेवानिवृत्त प्राचार्य,
सदस्य सलाहकार मंडल साईं सृजन पटल

लोक हितकारी परिषद डोईवाला ने जरूरतमंद 150 स्कूली बच्चों को बांटे स्वेटर

सामाजिक संगठन लोक हितकारी परिषद द्वारा 11 दिसंबर को वरिष्ठ पत्रकार स्व. राकेश खंडूरी की स्मृति में डोईवाला के विभिन्न विद्यालयों के 150 जरूरतमंद विद्यार्थियों को उनकी स्कूल ड्रेस के अनुरूप ऊनी स्वेटरों का वितरण किया गया। बालाजी वेडिंग प्वाइंट में आयोजित यह कार्यक्रम मुख्य अतिथि पूर्व राज्य मंत्री संदीप गुप्ता,पूर्व राज्य मंत्री करन बोरा, भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष रुचि भट्ट, किसान सेवा सहकारी समिति के पूर्व अध्यक्ष मनोज नौटियाल, नगर पालिका डोईवाला अध्यक्ष नरेंद्र सिंह नेगी,गन्ना समिति डोईवाला के उपाध्यक्ष हरभजन सिंह, स्व.राकेश खंडूरी की धर्मपत्नी स्मिता खंडूरी, प्रो.के.एल.तलवाड़ तथा तमाम जनप्रतिनिधियों व क्षेत्र के गणमान्य लोगों की मौजूदगी में अत्यंत सेवाभाव के साथ आयोजित किया गया। लोक हितकारी परिषद के गढ़वाल मंडलीय अध्यक्ष अश्वनी कुमार गुप्ता ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया कि वर्ष 1998 में गठित यह संस्था सोसाइटी एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत संगठन है। संस्था का मुख्यालय मेरठ में है। देहरादून जनपद इकाई और डोईवाला इकाई मिलकर जनहित के कार्यों का संपादन करती हैं। जनपद इकाई के अध्यक्ष उदय चंद पाल,महामंत्री नवल किशोर यादव, कोषाध्यक्ष विनय जिंदल व मीडिया प्रभारी प्रीतम वर्मा हैं। डोईवाला ब्लॉक इकाई में अध्यक्ष श्रीमती सुषमा, महामंत्री ओम प्रकाश काला,उपाध्यक्ष गुरुदेव सिंह, मंत्री पवन बलोदी,सदस्य सुदेश सहगल,सीमा रावत व राजेश जायसवाल कार्य कर रहे हैं। संस्था द्वारा जनहित के कार्यों में मुख्य रूप से छात्र–छात्राओं की समस्याओं का समाधान व हर संभव सहायता की जाती है। मेधावी छात्रों का सम्मान,वृक्षारोपण,स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन के साथ ही समय–समय पर विद्यार्थियों को स्वेटर, जूते व जरूरत का अन्य सामान भेंट किया जाता है। उल्लेखनीय है कि लोक हितकारी परिषद इन कार्यों के लिए स्वयं ही संसाधन जुटाती है।

सरकार से या अन्य किसी माध्यम से कोई फंड नहीं मिलता है। परिषद द्वारा किये जा रहे जनहित के कार्यों की क्षेत्रवासी मुक्तकंठ से सराहना करते हैं।

सूचना महानिदेशक बंशीधर तिवारी राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित

उत्तराखंड के सूचना महानिदेशक व अपर सचिव मुख्यमंत्री बंशीधर तिवारी राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हुए हैं। सुशासन में उत्कृष्टता के लिए पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया ने बंशीधर तिवारी को राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा है। उनकी छवि एक जुझारू और समर्पित अधिकारी की है। यह सम्मान उनकी बेहतरीन,कार्यशैली,पारदर्शी निर्णय क्षमता और जन–केंद्रित प्रशासनिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। बंशीधर तिवारी उत्तराखंड के उन चुनिंदा आईएएस अधिकारियों में से हैं,जिन्होंने जिला प्रशासन से लेकर शासन स्तर तक अपनी अलग पहचान बनाए रखी है। अपने लंबे प्रशासनिक करियर में उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए विकास, सुशासन और प्रशासनिक सुधारों को नई दिशा दी है। वर्तमान में वह मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण (एमडीडीए) के उपाध्यक्ष पद पर भी सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। शिक्षा विभाग में सर्वाधिक समय तक डीजी के रूप में भी सफल कार्यकाल के लिए भी उन्हें जाना जाता है।

छात्रवृत्ति

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष मुंबई द्वारा

कर्णप्रयाग कालेज के तीस विद्यार्थियों को मिली दो-दो हजार रुपए की शिक्षा सहायता

डॉ.शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग, चमोली में अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष मुंबई द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा सहायता उपलब्ध करवाई गई। 19 दिसंबर को महाविद्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में अध्ययनरत 30 जरूरतमंद छात्र–छात्राओं को शिक्षा सहायता के रूप में प्रत्येक को दो–दो हजार रुपए दिये गये। कार्यक्रम में मित्तल चौरिटीज मुबंई के ट्रस्टी सुरेश भाई मित्तल ने बतौर मुख्य अतिथि ऑनलाइन प्रतिभाग किया। उन्होंने छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि निरंतर अध्ययन ही सफलता प्राप्त करने की कुंजी है। विद्यार्थी जीवन से ही भविष्य का लक्ष्य निर्धारित कर लेना चाहिए। विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय के पूर्व सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो.के.एल.तलवाड़ ने मित्तल ट्रस्ट का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह लगातार तीसरा सत्र है जब कर्णप्रयाग कालेज के जरूरतमंद विद्यार्थियों को यह धनराशि मुहैया करवाई जा रही है। विद्यार्थियों को चाहिए की इस धनराशि को अपने पठन–पाठन पर ही व्यय करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राम अवतार सिंह ने कहा कि मित्तल ट्रस्ट द्वारा महाविद्यालय के जरूरतमंद विद्यार्थियों को पिछले दो सत्रों से ही यह शिक्षा सहायता दी जा रही है, इसके लिए महाविद्यालय परिवार उनका आभार व्यक्त करता है।

शिक्षा सहायता समिति के संयोजक डॉ.मदन लाल शर्मा ने बताया कि दो वर्ष पूर्व यह छात्रवृत्ति 15 विद्यार्थियों को दी जा रही थी, विगत सत्र से ट्रस्ट द्वारा साठ हजार रुपए प्राप्त हो रहे हैं, जिससे अब दोगुने यानि 30 विद्यार्थी इस धनराशि से लाभान्वित हो रहे हैं। यह धनराशि निस्संदेह इन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। कार्यक्रम में मित्तल महिला महाविद्यालय सरदार शहर(राजस्थान)के प्राचार्य डॉ.मृत्युजंय पारीक भी ऑनलाइन जुड़े रहे। उन्होंनें भी विद्यार्थियो को निरंतर अध्ययन के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में समिति के सदस्य डॉ.इन्द्रेश कुमार पांडेय, हिना नौटियाल, कीर्तिराम डंगवाल व कार्यालय से मुकेश कंडारी सहित चयनित विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका स्वाति सुंदरियाल ने किया। इस अवसर पर प्राचार्य ने शिक्षा सहायता समिति के संयोजक डॉ.मदन लाल शर्मा को सम्मानित भी किया जिनके प्रयास से यह धनराशि प्राप्त हो रही है। अब तक ट्रस्ट द्वारा कुल डेढ़ लाख रूपये शिक्षा सहायता के रूप में उपलब्ध के करवाये गये हैं।

नवाचार

भूकंप आने से कुछ सेकंड पहले 'भूदेव' ऐप करेगा सतर्क

राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण देहरादून ने भूकंप पूर्व चेतावनी प्रणाली को मजबूत बनाने के उद्देश्य से भूदेव मोबाइल ऐप के अनिवार्य उपयोग के निर्देश जारी किये हैं। सचिव, राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से जनपद के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को ऐप इंस्टॉल कराने तथा आम जनता को भी जागरूक कर ऐप डाउनलोड करवाने के निर्देश दिए हैं। भूदेव ऐप भूकंप के कुछ सेकंड पूर्व अलर्ट जारी करने में सक्षम है,जिससे समय रहते अधिक से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जा सकेगा। इसके अलावा ऐप में भूकंपीय गतिविधियों की दैनिक जानकारी, जियो–रेफरेंस्ड लोकेशन के साथ इंटरेक्टिव मैप और आपात स्थिति में एसओएस फीचर के माध्यम से लाइव लोकेशन साझा करने की सुविधा उपलब्ध है। प्रशासन ने ऐप इंस्टॉल करने की सरल प्रक्रिया भी साझा की है। प्ले स्टोर या ऐप स्टोर में 'भूदेव' सर्च कर इंस्टॉल करना होगा। मोबाइल नंबर, लोकेशन अनुमति और आपातकालीन संपर्क जोड़ने के बाद ऐप सक्रिय हो जाता है।

सराहना

साईं सृजन पटल ने सामाजिक संगठन 'लोक हितकारी परिषद' डोईवाला को दिया सम्मान चिन्ह

लोक हितकारी परिषद डोईवाला द्वारा 11 दिसंबर को स्कूली बच्चों के आयोजित 'ऊनी वस्त्र वितरण कार्यक्रम' में आमंत्रित साईं सृजन पटल के संस्थापक प्रो.के.एल.तलवाड़ ने परिषद के पदाधिकारियों को उनके सराहनीय कार्यों के लिए सम्मान चिन्ह भेंट किया।

पूर्व राज्य मंत्री संदीप गुप्ता,पूर्व राज्य मंत्री करन बोरा,अध्यक्ष नगर पालिका नरेंद्र सिंह नेगी व क्षेत्र के अन्य गणमान्य लोगों की उपस्थिति में यह सम्मान चिन्ह परिषद के मण्डलीय अध्यक्ष अश्वनी कुमार गुप्ता व जिला महामंत्री वरिष्ठ पत्रकार नवल किशोर यादव ने ग्रहण किया।

बल्ड डोनेशन

साईं सृजन पटल के उप संपादक अंकित तिवारी ने जन्मदिन पर किया रक्तदान

साईं सृजन पटल मासिक पत्रिका के उप संपादक और एम्स ऋषिकेश में कार्यरत अंकित तिवारी ने अपने जन्मदिन के अवसर पर 10 दिसंबर को ऋषिकेश में रक्तदान किया।

प्रो.के. एल.तलवाड़ ने अंकित को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जन्मदिन पर व्यक्ति को उपहार मिलते हैं,लेकिन इन्होंने जरूरतमंद लोगों को रक्तदान के रूप में अमूल्य उपहार दिया है। मानव रक्त का कोई विकल्प नहीं है।

रक्तदान ही किसी को जीवनदान दे सकता है। उल्लेखनीय है कि छात्र नेता रहे अंकित विद्यार्थी जीवन से ही समाज सेवा के कार्यों में सदैव सक्रिय रहते थे। वह विगत 11 वर्षों से अपने जन्मदिन पर रक्तदान करते आ रहे हैं। अपने साथ उन्होंने अपने मित्र अनुराग से भी इस मौके पर स्वैच्छिक रक्तदान करवाया। उनके इस कार्य के लिए साहित्यकार भारती मिश्रा सहित साईं सृजन पटल से जुड़े लेखक डॉ.इंद्रेश कुमार पांडेय, डॉ.चन्द्र भूषण बिजल्वाण, श्रीमती पूजा पोखरियाल व अमन तलवाड़ आदि ने भी उन्हें जन्मदिन की और स्वैच्छिक रक्तदान के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की।

सीएम ने टॉपर्स को 'भारत दर्शन शैक्षणिक भ्रमण' पर किया रवाना

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उत्तराखंड बोर्ड परीक्षा –2025 में हाईस्कूल परीक्षा के टॉपर 240 छात्र–छात्राओं के दल को 'भारत दर्शन शैक्षणिक भ्रमण' के लिए 8 दिसंबर को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये छात्र–छात्राएं अलग–अलग दलों में विभिन्न राज्यों का भ्रमण करेंगे। इस भ्रमण के जरिए प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को भारत की प्रगति,विज्ञान, तकनीक, इतिहास और संस्कृति को प्रत्यक्ष रूप से देखने–समझने का अवसर मिल रहा है।

मुख्यमंत्री ने छात्र–छात्राओं से अपील करते हुए कहा कि वे अपनी डायरी में यात्रा अनुभव लिखने के साथ उत्तराखंड में पहली बार हुए नवाचारों और उपलब्धियों को भी दर्ज करें। शैक्षणिक भ्रमण से लौटने के बाद इस डायरी के आधार पर प्रत्येक जनपद से दो–दो छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत किया जायेगा। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024–25 से प्रारंभ इस कार्यक्रम के प्रथम चरण में 156 छात्रों ने देश के महत्वपूर्ण वैज्ञानिक व तकनीकी संस्थानों का भ्रमण किया, इस वर्ष प्रतिभागियों की संख्या बढ़कर 240 हो गई है। ये प्रतिभावान छात्र–छात्राएं इसरो, श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, प्रोफेसर यू.आर. राव उपग्रह केंद्र और विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र जैसे संस्थानों का भ्रमण करेंगे। मुख्यमंत्री ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि जब वे इन संस्थानों का भ्रमण करेंगे तो उन्हें अनुभव होगा कि तकनीक के क्षेत्र में भारत कितना आगे बढ़ चुका है। किताबों से मिली शिक्षा महत्वपूर्ण है,लेकिन प्रत्यक्ष अनुभव से समझ और दृष्टिकोण में कई गुना वृद्धि होती है।

प्रस्तुति – अमन तलवाड़
सह संपादक

अनुभव

शैक्षणिक भ्रमण से लौटे विद्यार्थियों से राज्यपाल ने किया संवाद

राज्यपाल ले. ज. गुरमीत सिंह (सेनि.) द्वारा लोक भवन में आयोजित शैक्षिक भ्रमण के अनुभवों को साझा करने के दौरान, विद्यार्थियों ने न केवल भारत की विविधता को नजदीक से देखा, बल्कि देश की प्रगति और नवाचारों को भी समझा। इस यात्रा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों ने केरल, कर्नाटक और तेलंगाना के प्रमुख वैज्ञानिक और शैक्षिक संस्थानों, तकनीकी केंद्रों और ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। यह यात्रा उनके शैक्षिक ज्ञान को समृद्ध करने के साथ–साथ एक महत्वपूर्ण जीवन अनुभव के रूप में उभर कर आई। राज्यपाल ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि इस प्रकार के भ्रमण से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और समर्पण की भावना विकसित होती है। उनका मानना था कि यह यात्रा विद्यार्थियों के जीवन के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो न केवल उन्हें अपने भविष्य के लिए मार्गदर्शन देती है, बल्कि उन्हें भारत की सांस्कृतिक और वैज्ञानिक धरोहर से भी अवगत कराती है। उन्होंने यह भी कहा कि भले ही हमारे विभिन्न राज्य अपनी भाषाओं, पहनावे और परंपराओं में भिन्न हों, परंतु देश का दिल एक ही स्थान पर धड़कता है और यह भ्रमण विद्यार्थियों को इस सामूहिकता का अहसास कराता है। राज्यपाल ने कहा कि किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संकल्प, अनुशासन और कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है। सफलता बिना मेहनत के कभी नहीं मिल सकती। भारत की विविधता को समझने के लिए इस शैक्षिक भ्रमण का महत्व अत्यधिक है। यह विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, रीति–रिवाजों, खानपान और पहनावे के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसके साथ ही, यह उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों के इतिहास और शैक्षिक प्रगति से भी अवगत कराता है। भारत में भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं की एक अद्वितीय विविधता है, और जब विद्यार्थी इस विविधता को नजदीक से देखते हैं, तो उनका मानसिक दृष्टिकोण व्यापक और समृद्ध होता है। यह समझ उन्हें न केवल अपने देश के प्रति गर्व की भावना पैदा करती है, बल्कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता का अहसास भी कराती है।

शैक्षिक भ्रमण केवल ज्ञान की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी अत्यंत लाभकारी होता है। जब विद्यार्थी देश के विभिन्न हिस्सों को भ्रमण करते हैं, तो वे न केवल नई जानकारी प्राप्त करते हैं, बल्कि उन्हें अपने जीवन के मूल्यों, उद्देश्य और लक्ष्य पर पुनर्विचार करने का अवसर भी मिलता है। यह यात्रा उन्हें आत्ममूल्यांकन करने और अपने जीवन के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से पहचानने का समय प्रदान करती है।

शैक्षिक भ्रमण न केवल विद्यार्थियों के लिए एक शैक्षिक अवसर होता है, बल्कि यह उनके मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उपसंपादक

सम्मान

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' प्रतिष्ठित लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से पुरस्कृत

दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती महाविद्यालय में आयोजित काशी इंडिया इंटरनेशनल फिल्म महोत्सव सम्मान–2025 समारोह में पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री एवं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' को शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और लेखन के क्षेत्र में उनके दीर्घकालिक एवं उत्कृष्ट योगदान के लिए 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' से नवाजा गया।

यह सम्मान भारतीय साहित्य, शिक्षा–विचार, सांस्कृतिक मूल्यों और भारतीय ज्ञान परंपरा के वैश्विक प्रसार में डॉ. निशंक के बहुआयामी योगदान की स्वीकृति है। उनके साहित्यिक कार्यों, विचारों और सृजनशीलता ने हिंदी भाषा और भारतीय सांस्कृतिक पहचान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट स्थान दिलाया है। इससे पूर्व संस्था ने पद्मश्री सुरेंद्र

शर्मा, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, डॉ. दया प्रकाश सिन्हा, अभिनेत्री पूनम ढिल्लों, रघुवीर यादव जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों को भी सम्मानित किया था।

इस अवसर पर डॉ. निशंक ने अपने संबोधन में कहा, 'मैं हृदय की गहराइयों से काशी इंडिया इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के संपूर्ण परिवार का आभारी हूँ कि आपने मुझे 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया। इस विशिष्ट सम्मान को अत्यंत विनम्रता पूर्वक स्वीकार करते हुए, मैं इसे अपने पाठकों, देश के सम्मानित अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को समर्पित करता हूँ।' डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' को यह सम्मान भारतीय साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान के लिए दिया गया, जो न केवल देश के भीतर, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभावशाली रहा है।

उपलब्धि

खेलो इंडिया में श्रीदेव सुमन विवि ने जीता रजत पदक

साहिया कॉलेज के पहलवान सागर का शानदार प्रदर्शन

खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 में हिस्सा लेकर श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय (सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय पी.जी. कॉलेज, साहिया) के पहलवान सागर ने अपनी उत्कृष्ट कौशल क्षमता का प्रदर्शन करते हुए 70 किलोग्राम भार वर्ग फ्री–स्टाइल कुश्ती में रजत पदक जीता।

फाइनल मुकाबले में उनका सामना चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के खिलाड़ी अनुज से हुआ। मुकाबला बेहद करीबी रहा, जिसमें सागर ने दमदार संघर्ष किया, लेकिन मामूली अंकों के अंतर से दूसरे स्थान पर रहे। प्रतियोगिता के दौरान सागर ने तेलंगाना, पंजाब और हरियाणा के खिलाड़ियों को हराकर फाइनल में जगह बनाई। पूरे टूर्नामेंट में उनके आत्मविश्वास, तकनीक और खेलभावना ने न केवल श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया,बल्कि उत्तराखंड का नाम भी राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया। उनके प्रदर्शन की खूब सराहना हुई। सागर की इस उपलब्धि पर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय प्रशासन ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

विश्वविद्यालय के क्रीड़ा सचिव डॉ. पुष्कर गौड़ ने कहा कि सागर का यह प्रदर्शन प्रेरणादायक है और वह विश्वविद्यालय के उभरते खिलाड़ियों के लिए एक उदाहरण हैं। साहिया कॉलेज के चेयरमैन अनिल सिंह तोमर ने कहा कि सागर ने हर मुकाबले में संयम, ऊर्जा और उत्कृष्ट तकनीक का प्रदर्शन किया, जो उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण का परिणाम है।

टीम मैनेजर डॉ. रवि कुमार ने बताया कि खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 में देशभर के 23 राज्यों के 200 से अधिक विश्वविद्यालयों और 5000 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। ऐसे प्रतिष्ठित मंच पर सागर का रजत पदक जीतना विश्वविद्यालय और महाविद्यालय दोनों के लिए गर्व की बात है और भविष्य की राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए प्रेरणास्रोत भी।